भारत ज्ञानकोश

ENCYCLOPÆDIA
Britannica

भारत ज्ञानकोश

खंड 3

द से ब

(दंडकारण्य से बालसरस्वती, टी.)

नोपीडिया ब्रिटैनिका (इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड
नई दिल्ली
और
पॉप्युलर प्रकाशन
मुंबई

ISBN 81-7154-993-4 सपूर्ण सेट

आलोक वाधवा द्वारा एन्साइक्लोपीडिया ब्रिटैनिका (इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड, 55--56, उद्योग विहार फेज IV, गुड़गांव, हरियाणा, 122016 के लिए और हर्षा भटकल द्वारा पॉप्युलर प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, 35–सी, पंडित मालवीय मार्ग, तारदेव, मुंबई के लिए प्रकाशित पेज मेकअप और चित्रो की स्कैनिंग रेडिएंट प्रिंटर्स, नई दिल्ली, मुद्रण और बाइडिंग गोपसन्स पेपर्स लिमिटेड, नोएडा

Master Code 3745

विषय–सूची

प

फ

द

दडकारण्य

पूर्वी मध्य भारत का भौतिक क्षेत्र करीब 92,300 वर्ग किमी क्षेत्रफल मे फैले इस इलाक़े के पश्चिम में अबूझमाड पहाडियां तथा पूर्व मे इसकी सीमा पर पूर्वी घाट शामिल हैं. दडकारण्य मे छत्तीसगढ, उडीसा एवं आंध्र प्रदेश राज्यों के हिस्से शामिल हैं. इसका विस्तार उत्तर से दक्षिण तक क़रीब 320 किमी तथा पूर्व से पश्चिम तक लगभग 480 किमी है. दंडक वन (राक्षस दंडक का आवास) पर इस क्षेत्र का नाम पड़ा, जिसका उल्लेख *रामायण* महाकाव्य में है. प्राचीन समय में नल, वाकाटक एवं चालुक्य वंशों ने इस पर सफलतापूर्वक शासन किया. यहां आदिवासी (गोंड) रहते हैं. क्षेत्र का अधिकतर भाग रेतीला समतलीय है, जिसकी ढलान क्रमशः उत्तर से दक्षिण–पश्चिम की तरफ़ है. दडकारण्य में व्यापक वनाच्छादित पठार एवं पहाडियां है, जो पूर्व दिशा से अचानक उभरती हैं तथा पश्चिम की ओर धीरे–धीरे इनकी ऊंचाई कम होती चली जाती है. यहां कई अपेक्षाकृत विस्तृत मैदान भी हैं. इस क्षेत्र की जल निकासी महानदी (जिसकी सहायक नदियों में तेल, जोंक, उदति, हट्टी, एवं सांदुल शामिल हैं) तथा गोदावरी (जिसकी सहायक नदियों में इंद्रावती और साबरी शामिल हैं) द्वारा होती है पठार एवं पर्वतीय इलाक़ों में दोमट मिट्टी की पतली परत है. मैदानी इलाक़ों एवं घाटियों में उपजाऊ, जलोढ़ मिट्टी है इस क्षेत्र में आर्थिक रूप से क़ीमती साल के नम वन हैं, जो कुल क्षेत्र के लगभग आधे हिस्से में फैले हैं. यहां की अर्थव्यवस्था कृषि पर आधारित है; फ़सलों में चावल, दालें एवं तिलहन शामिल हैं. उद्योगों में धान एवं दलहन (अरहर) की मिलें, आरा घर, अस्थि–चूर्ण निर्माण, बीड़ी निर्माण, मधुमक्खीपालन और फ़र्नीचर निर्माण उद्योग शामिल है यहां बॉक्साइट, लौह अयस्क एवं मैंगनीज के भंडार हैं. केंद्र सरकार ने 1958 मे पाकिस्तान से आए शरणार्थियों की मदद के लिए दंडकारण्य विकास प्राधिकरण का गठन किया. इसने भास्केल बांध एवं पाखनजोर जलाशय; जगदलपुर, बोरेगांव एवं उमरकोट में काष्ठशिल्प केंद्र तथा शरणार्थी पुनर्वास क्षेत्रों में बलांगीर–कोजिलम रेलवे परियोजना सहित सड़कों और रेलमार्गों का निर्माण किया. मुख्य रूप से विमानों के इजन बनाने वाली ऐरो–इंजन फ़ैक्ट्री सुनाबेड़ा मे स्थित है. राष्ट्रीय खनिज विकास निगम बेलाडीला में लौह अयस्क का उत्पादन करता है यहां के महत्त्वपूर्ण नगर है– जगदलपुर, भवानीपाटणा और कोरापुट.

दडी

(छठी शताब्दी के अंत और सातवी शताब्दी के प्रारंभ में सक्रिय), संस्कृत शृंगारिक गद्य के लेखक और काव्यशास्त्र के व्याख्याकार. दो महत्त्वपूर्ण रचनाएं सामान्यतः निश्चित

रूप से उनकी मानी जाती हैं, *दशकुमार चरित*, 1927 में *द एडवेंचर्स ऑफ़ द टेन प्रिंसेज़* शीर्षक से अनूदित और *काव्यादर्श* (कविता का आदर्श).

दशकुमारचरित 10 राजकुमारों के प्रेम व सत्ता प्राप्ति के उनके प्रयासों के दौरान सुख–दुख का वर्णन करता है. यह रचना मानव के अवगुणों के यथार्थपरक चित्रण और परालौकिक चमत्कार, जिसमें देवताओ का मानवीय मामलो में हस्तक्षेप शामिल है से ओतप्रोत है

काव्यादर्श साहित्यिक आलोचना की रचना है, जो कविता की प्रत्येक प्रकार की शैली व भावना के आदर्शो को परिभाषित करती है.

दक्कन

नर्मदा नदी के दक्षिण की ओर भारत का समूचा दक्षिणी प्रायद्वीप, मध्य में ऊंचा त्रिभुजाकार पठार है. यह नाम सस्कृत के *दक्षिण* से व्युत्पन्न है. पठार पूर्व और पश्चिम मे घाटों, जो पठार के दक्षिणी छोर पर मिलते हैं, से घिरा है. इसका उत्तरी अंतिम छोर सतपुड़ा पर्वतमाला है. दक्कन की औसत ऊंचाई लगभग 600 मीटर है, जिसकी ढलान सामान्यतः पूर्व की ओर है. इसकी प्रमुख नदिया, गोदावरी, कृष्णा और कावेरी पश्चिमी घाट से पूर्व में बंगाल की खाड़ी की ओर बहती हैं. पठार की जलवायु तट के मुकाबले शुष्क है और कही–कही भूमि ऊसर है.

दक्कन का आरंभिक इतिहास अस्पष्ट है. यहां प्रागैतिहासिक मानव के निवास के प्रमाण हैं. कम वर्षा ने सिंचाई की शुरुआत होने तक कृषि को दुष्कर बनाया होगा पठार की खनिज संपदा ने निम्नभूमि प्रदेश के कई राजाओं, जिनमे मौर्य (चौथी से दूसरी शताब्दी ई.पू.) और गुप्त (चौथी से छठी शताब्दी) वंश शामिल थे, मे उस पर आधिपत्य के लिए युद्ध कराए. छठी से तेरहवी शताब्दी तक चालुक्य, राष्ट्रकूट, उत्तरवर्ती चालुक्य, होयसल और यादव वंशो ने दक्कन में सफलतापूर्वक क्षेत्रीय राज्यों की स्थापना की, लेकिन पडोसी राज्यों व विद्रोही जागीरदारों से उनके संघर्ष सतत चलते रहते थे. उत्तरवर्ती राज्य दिल्ली की मुस्लिम सल्तनत द्वारा लूटमार के शिकार रहे जिसने अंततः इस क्षेत्र पर अधिकार जमा लिया.

1374 मे मुसलमान बहमनी वंश ने दक्कन में एक स्वतत्र राज्य की स्थापना की बहमनी का स्थान लेने वाले व उसके क्षेत्र को बाटने वाले पाच राज्यो की सयुक्त सेनाओ ने 1565 में तालिकोटा में दक्षिण के हिंदू साम्राज्य विजयनगर को हराया. अपने शासनकाल के अधिकांश समय में पांचों उत्तराधिकारी राज्यों ने किसी एक राज्य को क्षेत्र पर प्रभुत्व स्थापित करने से रोकने और 1656 से उत्तर की ओर से मुग़ल साम्राज्य के आक्रमणो से बचाव के लिए अस्थायी गठबंधन बनाए. 18वी शताब्दी में मुग़ल पराभव के दौरान मराठो हैदराबाद के निज़ाम और ऑर्काट के नवाब ने दक्कन पर नियंत्रण हेतु प्रतिस्पर्द्धा की उनकी शत्रुताओं और उत्तराधिकार संबंधी संघर्षो के कारण अग्रेज़ों द्वारा दक्कन को

क्रमशः लीलते जाने का मार्ग प्रशस्त हुआ. जब 1947 में भारत स्वतंत्र हुआ तब हैदराबाद रियासत आरंभ में विरोध करने के बाद 1948 मे भारतीय संघ में शामिल हो गई.

दक्कनी चित्रकला

प्रायद्वीपीय भारत की दक्कनी सल्तनतों मे 16वीं शताब्दी के अत से विकसित हुई पुस्तकों के अलंकरण की शैली. यह शैली स्थानीय व विदेशी कला शैलियो का एक सवेदनशील और खासा एकीकृत सम्मिश्रण है. प्रलंबित आकृतियां विजयनगर भित्तिचित्रों से संबद्ध प्रतीत होती हैं, जबकि फूलों की शाखाओं से सज्जित पृष्ठभूमि, ऊंचे क्षितिज और भू--दृश्यो का सामान्य प्रयोग फ़ारसी प्रभाव दर्शाते हैं. दक्कनी रग गाढ़े व चमकीले हैं और सुनहरे व सफ़ेद रंगों का अधिक प्रयोग किया गया है.



राग आसावरी, दक्कनी शैली का चि भारत, मध्य 18वीं शताब्दी; एक निर्जी फ़ोटो पी चंद्रा

प्राचीनतम पांडुलिपि बीजापुर की 1570 की *नुजूम--उल--उलूम* (*द स्टार्स ऑफ़ द साइंसेज़,* अब चेस्टर बीटी पुस्तकालय, डबलिन मे) प्रतीत होती है, जो दक्कनी शैली के प्रमुख केंद्रों में से एक बना रहा बीजापुर में, चित्रकारी और अन्य कलाओं को इब्राहीम आदिल शाह II (1580–1627) ने बहुत प्रोत्साहित किया. वह स्वय एक महान सगीतकार और कलाप्रेमी थे इब्राहीम आदिल शाह II के कई शानदार समकालीन चित्र मौजूद हैं. अन्य महत्त्वपूर्ण केंद्र थे, अहमदनगर, गोलकुंडा और 18वीं शताब्दी के दौरान औरंगाबाद व हैदराबाद 17वीं शताब्दी से उत्तर की मुग़ल शैलियों व दक्कन की शैलियों का एक–दूसरे पर एक निश्चित प्रभाव पडा. राजस्थान व मध्य भारत के हिंदू राजदरबारों मे पुस्तकों के अलकरण के विकास पर भी दक्कनी कला का प्रभाव रहा

दक्षिण भारतीय कांस्य मूर्तियां

हिंदू देवताओं की उपासना मूर्तियों में से एक, जो भारतीय दृश्य कला की उत्कृष्टतम उपलब्धियों में एक है ये मूर्तियां मुख्य रूप से आधुनिक तमिलनाडु के तंजावुर एवं तिरुचिराप्पल्ली ज़िलों में आठवीं से सोलहवीं सदी तक बड़ी संख्या में बनाई गईं तथा इन्होंने लगभग 1,000 साल तक उत्कृष्टता का अपना उच्च मानदंड क़ायम रखा.

पल्लव काल के दौरान धातु मूर्तिकला ने समकालीन प्रस्तर मूर्तिकला के सिद्धांतों का अनुकरण किया. मूर्तिया लगभग हमेशा अग्रभागी होती थीं, यद्यपि गोलाइयां पूरी तरह बढी होती थीं और बांहे दोनों ओर समरूप स्थित रहती थीं. प्रारंभिक चोल काल (10वीं–11वीं सदी) की मूर्तियों में गति का बेहतर प्रवाह विद्यमान है तथा नृत्य की हस्त


वेश में शिव, तमिलनाडु से प्राप्त भारतीय कांस्य मूर्ति, 11वीं शताब्दी तंजावुर और कला दीर्घा, ...डु ...ी चद्रा

मुद्राओं और गतियों का अक्सर इस्तेमाल किया गया है चोल प्रतिमाएं अपने लालित्य, संवेदनशील प्रतिरूपण और संतुलित तनाव में बेजोड हैं. विजयनगर काल (1336–1565) के दौरान आलंकारिकता ज्यादा विस्तृत हो गई, जिससे शरीर की सहज लय में बाधा आ गई और मुद्राएं ज्यादा स्थिर हो गईं

प्रतिमाएं छोटी घरेलू मूर्तियों से लेकर आदमकद तक होती थीं, जिन्हे मंदिर की शोभायात्रा में ले जाया जाता था. कुछ बौद्ध एवं जैन मूर्तिया भी बनाई गई, लेकिन ज्यादातर मूर्तियां अपनी पत्नियों एवं सेवकों सहित हिंदू देवताओ, विशेषकर भगवान शिव और विष्णु की विभिन्न छवियों का प्रतिनिधित्व करती थीं. उत्कृष्ट मूर्तियों में शैव और वैष्णव संतों (आलवारो) की कई प्रतिमाएं भी शामिल हैं.

मूर्तियों की ढलाई मोम के सांचे की प्रक्रिया से की जाती थी. ढलाई के बाद मूर्तियों को नक्काशी और गढ़ाई द्वारा अंतिम रूप दिया जाता था दक्षिण भारतीय कांस्य मूर्तिया तमिलनाडु मे तंजावुर संग्रहालय और कला दीर्घा तथा चेन्नई (भूतपूर्व मद्रास) में संगृहीत हैं, लेकिन बड़ी सख्या मे उत्कृष्ट मूर्तियां दक्षिण भारत के विभिन्न मंदिरों मे हैं.

दक्षिण भारतीय मंदिर स्थापत्य


...र तमिलनाडु मे कोलिश्वर मंदिर, नवीं ...का उत्तरार्द्ध ...ी चद्रा

द्रविड़ शैली भी कहते हैं, आधुनिक तमिलनाडु में सातवी से अठारहवी सदी तक निरपवाद रूप से अधिकतर हिंदू मंदिरो में प्रयुक्त, जिसकी विशेषता पिरामिडीय या कुटिन शैली का ऊंचा शीर्ष है. कर्नाटक के पूर्व में मैसूर एवं आंध्र प्रदेश राज्यो में इसके अलग–अलग स्वरूप पाए जाते हैं.

दक्षिण भारतीय मंदिरों में अनिवार्य रूप से वर्गाकार कक्षीय गर्भगृह, उसके ऊपर एक अधिसंरचना– शिखर या कलश तथा इससे सलग्न स्तंभयुक्त मंडप या मंडपम, जो आयताकार प्रागण के किनारे खंभों की पंक्तियों वाले कक्षों से घिरे होते हैं. मंदिर की बाहरी दीवार भित्ति–स्तंभों से बंटी रहती है तथा इसमे मूर्तिया रखने के लिए आले बने होते है. गर्भगृह के ऊपर की अधिरचना या शीर्ष कुटिन शैली का होता है तथा पिरामिडीय आकार मे क्रमश. पीछे हटती व घटती हुई मंज़िलें होती हैं. प्रत्येक मंजिल लघु वेदिकाओं की पक्ति से रेखाकित होती है, जो किनारों पर वर्गाकार तथा मध्य मे आयताकार होती है मीनार के शीर्ष में गुबदनुमा शिखर, एक अभिषेक पात्र एवं कलश होता है.

द्रविड शैली का प्रारंभ गुप्त काल मे देखा जा सकता है. विकसित शैली के प्रारंभिक मौजूदा उदाहरण महाबलीपुरम मे सातवीं सदी के चट्टानो को काटकर बनाया गया मंदिर तथा इसी स्थल पर बना विकसित सरचनात्मक तट मंदिर (लगभग 700 ई.) है

दक्षिण भारतीय शैली तंजावुर में राजराजा महान द्वारा करीब 1003–10 ई में निर्मित भव्य बृहदीश्वर मंदिर तथा लगभग 1025 ई. में उनके पुत्र राजेद्र चोल द्वारा गगैकोंडचोलपुरम मे निर्मित विशाल मदिर में पूरी तरह निखरी है. तत्पश्चात यह शैली उत्तरोत्तर अलंकृत होती गई, प्रागण से घिरा मंदिर परिसर बड़ा हो गया तथा क्रमश गोपुरम (द्वार) के साथ कई परकोटे जोड़े गए. विजयनगर काल (1336–1565) तक गोपुरम का आकार इतना बढ़ गया कि वे भीतर वाले छोटे मंदिरों पर छा गए.

दक्षेस

पूरा नाम 'दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग सगठन', 1985 मे स्थापित दक्षिण एशियाई राष्ट्रों का संगठन. यह आर्थिक, तकनीकी, सामाजिक और सांस्कृतिक विकास को समर्पित है जिसमें विशेष ज़ोर सामूहिक आत्मनिर्भरता पर है. इसके सात संस्थापक सदस्य हैं, बाग्लादेश, भूटान, भारत, मालदीव, नेपाल, पाकिस्तान और श्रीलका. शासनाध्यक्षों की बैठकें सामान्यतः प्रतिवर्ष और विदेश सचिवो की बैठकें वर्ष में दो बार आयोजित की जाती हैं. दक्षेस का मुख्यालय काठमांडू, नेपाल में है.

दक्षेस द्वारा सहयोग के निर्धारित क्षेत्र हैं : कृषि एवं वानिकी, स्वास्थ्य और जनसंख्या, डाक सेवाएं, महिला विकास, नशीले पदार्थों का व्यापार एव दुरुपयोग, खेलकूद, कलाएं और संस्कृति. अन्य विषय, जैसे पर्यटन और आतंकवाद भी लक्षित हैं. चार्टर में व्यवस्था है कि निर्णय सर्वसम्मति से हों तथा 'द्विपक्षीय और विवादास्पद मसलों' से बचा जाए.

दख्मा

(अवेस्ता में उद्भासन का स्थान), पारसी धर्म के अतिम संस्कार की विधि मे पारसी अत्येष्टि मीनार, जिसका उपयोग मृत देह के समापन के लिए किया जाता है; अंत्येष्टि अनुष्ठान किए जाने का क्षेत्र. यदि सभव हो तो दख्मा हमेशा ऊंची जगह पर स्थित होता है. एक गहरा कुआं खोदा जाता है, जिसके तल में चूना, चारकोल और अन्य अस्थिविलायक पदार्थों की तहें बिछाई जाती हैं. इस कुएं के गिर्द तीन पावी या चबूतरे होते हैं, एक पुरुषो के शवों के लिए, एक स्त्रियों के शवों के लिए और एक बच्चों के शवो के लिए. अंत्येष्टि के अनुष्ठानों की समाप्ति के बाद शव को खुली मीनार के दरवाज़े पर लाया जाता है और नस्सासला (अंत्येष्टि करने वाले) उसे ले लेते हैं. वे शव को पावी तक ले जाते है और उसे निर्वस्त्र करके उसे गिद्धों तथा अन्य मृतभोजी पक्षियों द्वारा खाए जाने के लिए छोड़ देते है. एक सप्ताह के बाद लौट कर वे शव के अवशेषों को कुएं में डाल देते हैं. कुए में नालियां होती हैं, जिनमें अस्थियां पूर्णत घुल जाती हैं और बारिश के पानी से अन्य अवशेष भी बह जाते हैं तथा साफ़ पानी आसपास की भूमि से होकर बहता है, जो आमतौर पर एक बगीचा होता है. पारंपरिक दख्मा अब भी मुंबई (भूतपूर्व बंबई) में है, लेकिन माना जाता है कि ऊंचे भवनों के कारण मृतभोजी या शिकारी पक्षी अब वहां नहीं आते. दख्मा को आधुनिक विद्युत शवदाहगृह मे बदलने का भी प्रस्ताव है, जिसमें कोई ज्वाला नहीं होगी (क्योंकि पारसी

धर्म मे अग्नि को पवित्र माना जाता है). पारसी समुदाय ने अब तक इस प्रकार के परिवर्तन को स्वीकार नहीं किया है.

दतिया

नगर, उत्तर–मध्य मध्य प्रदेश राज्य, मध्य भारत यह भोपाल के पूर्वोत्तर और ग्वालियर के दक्षिण–पश्चिम में स्थित है यह एक महत्त्वपूर्ण सड़क जंक्शन है और उत्तर प्रदेश व मध्य प्रदेश के नगरो से अच्छी तरह से जुडा है. दतिया मध्य रेलवे के झांसी–दिल्ली मार्ग का महत्त्वपूर्ण जक्शन है. उस नगर का नाम इस क्षेत्र के मिथकीय दैत्य शासक दंतवक्र पर पडा है. मुगल शासन के दौरान यह एक छोटा गाव था. इसकी स्थापना ओरछा के भगवान राव ने की थी. पहाड़ी क्षेत्र में स्थित यह नगर पांच छोटी पहाडियो पर फैला है और एक पत्थर की प्राचीर से घिरा है यह नगर प्राचीन दतिया रियासत की राजधानी था और यहां पर अनेक महल व बाग़ स्थित हैं. 17वीं सदी का बीरसिह देव का महल उत्कृष्ट वास्तु का उदाहरण है. दतिया में शुभकरण का महल और भूतपूर्व शासक परिवार के सदस्यों का स्मारक सुरही छत्री जैसे स्मारक भी दिलचस्प हैं. यहां के पुरातात्विक महत्त्व के उल्लेखनीय उदाहरणों में नृसिह देव महल, गोविंद निवास, राजगढ, भवानी विलास महल और राधा निवास शामिल हैं. 1907 में दतिया नगरपालिका बना.

दतिया अनाज व कपास के सामान का व्यापार केंद्र है. नगर के आसपास उगाई जाने वाली फसलों में सोरघम, मक्का, गेहू और फली शामिल हैं. एक आयुर्वेदिक औषधशाला (पारंपरिक भारतीय विधियों पर आधारित) में बडे पैमाने पर दवाएं तैयार की जाती हैं. लघु कुटीर उद्योगो में टॉर्च के बल्ब, प्लास्टिक की वस्तुएं, लकड़ी का सामान और मिठाइयो का उत्पादन शामिल है नगर में जीवाजी विश्वविद्यालय से संबद्ध अनेक महाविद्यालय हैं जनसंख्या (2001) नगर 82,742, ज़िला कुल 6,27,818

दत्त, उत्पल

(ज.–29 मार्च 1929, बारिसाल, बंगाल {वर्तमान बांग्लादेश}, भारत; मृ.–19 अग 1993 कलकत्ता {वर्तमान कोलकाता}, भारत), अभिनेता, निर्देशक और लेखक, 40 वर्षों तक बांग्ला रंगमंच और सिनेमा की एक महत्त्वपूर्ण हस्ती वह साम्यवादी विचारधारा के लिए अपनी प्रतिबद्धता और बंगाल के ग्रामीण क्षेत्रो मे खुले मच पर समकालीन राजनीतिक नाटकों की प्रस्तुति के लिए विख्यात थे

दत्त की शिक्षा–दीक्षा कलकत्ता में हुई थी, जहां उन्होंने कलकत्ता लिट्ल थियेटर ग्रुप की स्थापना (1947) की. उन्होंने दो बार शेक्सपीयरियन इंटरनेशनल थियेटर कंपनी (1947–49; 1953–54) के साथ दौरे किए और ऑथेलो की भूमिका में उत्कट भावपूर्ण अभिनय के लिए प्रशंसित हुए. 1954 से उन्होंने विवादास्पद बांग्ला राजनीतिक नाटक लिखे और निर्देशित किए, जिनमें *अंगार* (1959) उल्लेखनीय है 1965 में उन्हे गिरफ़्तार करके कई महीनो तक हिरासत में रखा गया, क्योंकि सत्तारूढ़ कांग्रेस पार्टी

को डर था कि उनका नाटक *कल्लोल* पश्चिम बगाल में सरकार विरोधी प्रदर्शनो को बढावा दे रहा है. 1970 के दशक में सरकारी प्रतिबंध के बावजूद उनके नाटकों मे दर्शकों की भीड़ होती थी. उत्पल दत्त ने लगभग 200 फ़िल्मों में अभिनय किया, जिसकी शुरुआत *माईकेल मधुसूदन* (1950) से हुई थी. निर्देशक के रूप मे उन्हें ख़ासी सफलता मिली, विशेषत: *मेघ* (1961), *झार* (1978) और *मदर* (1984) के लिए. वह एक प्रखर और नाटकीय अभिनेता थे और उन्होंने सत्यजीत राय (*जनारण्य, आगंतुक*), मृणाल सेन (*भुवन सोम, कोरस*) और जेम्स आइवरी (*शेक्सपीयर वाला, द गुरु*) के निर्देशन में अपनी सर्वोत्कृष्ट कला का प्रदर्शन किया. 1970 में स्वर्णकमल प्राप्त फ़िल्म *भुवन सोम* मे सर्वश्रेष्ठ अभिनय के लिए उन्हे राष्ट्रीय पुरस्कार दिया गया. उन्होंने शेक्सपीयर और क्रांतिकारी थियेटर पर पुस्तकें भी प्रकाशित कीं.



उत्पल दत्त
सौजन्य एस.पी. नरुला, *हिंदु*

दत्त, माइकेल मधुसूदन

(ज.–25 जन. 1824, सागरदरी {वर्तमान बांग्लादेश}; मृ.–29 जून 1873, कलकत्ता, बगाल, भारत), कवि और नाटककार, आधुनिक बांग्ला साहित्य के पहले महान कवि. दत्त का व्यक्तित्व ओजस्वी, अपरंपरावादी था और वह उच्च कोटि के मौलिक प्रतिभावान व्यक्ति थे. उन्होंने कलकत्ता के हिंदू कॉलेज में शिक्षा प्राप्त की, जो पश्चिमी शिक्षा प्राप्त बगाली मध्यम वर्ग का सांस्कृतिक गढ़ था. 1843 में वह ईसाई बन गए.

उनकी आरभिक रचनाएं अंग्रेज़ी मे थीं, लेकिन वह असफल रहीं और शुरू में झिझकते हुए वह बांग्ला की ओर मुड़े. उनकी प्रमुख रचनाएं 1858 और 1852 के दौरान लिखी गईं, जिनमें गद्य, नाटक, लंबी कविताएं और गीत शामिल हैं. उनका पहला नाटक *शर्मिष्ठा* (1858) प्राचीन सांस्कृतिक ग्रंथ *महाभारत* की एक कथा पर आधारित है, जो लोकप्रिय रहा. उनकी काव्य रचनाएं हैं : *तिलोत्तमासंभव* (1860) सुंद और उपसुद की कथा पर आधारित लंबी कविता; *रामायण* पर आधारित *मेघनाद वध* (1861) उनकी सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण रचना, राधा–कृष्ण पर आधारित गीतों की कड़ी, रचना *बृजांगन* (1861) और ओविड की हेराडीस की शैली पर आधारित वीर रस की 21 कविताओं का संग्रह *वीरांगना* (1862).

दत्त जीवन भर पद योजना और काव्य शैलियो मे अनथक प्रयोग करते रहे और उन्होंने अमित्राक्षर (मुक्त छंद का एक प्रकार, जिसमें एक पंक्ति दूसरी मे चली आए और विभिन्न यतियां हों), पेत्रार्शी व शेक्सपियरी, दोनों शैलियों में बांग्ला सॉनेट और कई मौलिक गीति–पदों को जन्म दिया.

दमदम

कोलकाता (भूतपूर्व कलकत्ता) का औद्योगिक उपनगर, दक्षिण–पूर्वी पश्चिम बंगाल राज्य, पूर्वोत्तर भारत. यह नाम फारसी शब्द दमदम से लिया गया है, जिसका मतलब

उठा हुआ टीला या तोपख़ाना है. दमदम के चार अलग क्षेत्र है, दो कस्बे एवं दो शहर जो क्रमशः दमदम, दमदम हवाई अड्डा इलाका, उत्तरी दमदम और दक्षिणी दमदम है दमदम हवाई अड्डा (नेताजी सुभाष अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा, कलकत्ता) का प्रशासन भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण के अंतर्गत आता है. ये सभी कोलकाता शहरी संकेंद्रण का हिस्सा हैं. उत्तरी दमदम में अब भी बड़े ग्रामीण अंतःक्षेत्र हैं. दक्षिणी दमदम बृहद कोलकाता का उत्तरी छोर है. इन चारों क्षेत्रो में सर्वाधिक प्रसिद्ध 1783 में स्थापित दमदम है. यह 1853 तक बंगाल तोपख़ाने का मुख्यालय रहा. यहां गोला--बारूद कारखाना है, जहां पहली बार दमदम प्रसरणशील गोलियां बनाई गई. यहां जूट मिलें, चर्मशोधन शाला, लोहा एवं इस्पात–चादर निर्माण शाला, काच, माचिस एवं साबुन के कारख़ाने तथा कई बड़ी–बड़ी अभियांत्रिकी सस्थाएं है. इस नगर में कई अस्पताल तथा कलकत्ता विश्वविद्यालय से संबद्ध अनेक महाविद्यालय हैं. 1883 में कादीहाटी नगरपालिका का विलय करके इस नगर का विस्तार किया गया था. जनसख्या (2001) नगर 11,01,319.

दमन एवं दीव

व्यापक रूप से दो पृथक जिलों वाला पश्चिमी तटवर्ती भारत का केंद्रशासित प्रदेश 72 वर्ग किमी क्षेत्रफल वाला दमन गुजरात का दक्षिणी तटीय अंतःक्षेत्र है, जो मुबई (भूतपूर्व बंबई) से लगभग 160 किमी उत्तर मे है. 24 किमी में फैला दीव एक द्वीप है जो गुजरात के काठियावाड़ प्रायद्वीप के दक्षिणी तट के समीप वेरावल से 64 किमी दक्षिण–पूर्व में स्थित है.

भौतिक एवं मानव भूगोल

दमन जलोढ़ तटवर्ती मैदान पर स्थित है, लेकिन इस क्षेत्र में बेसाल्ट के उभरे हिस्से कम ऊंचाई वाले पठार एवं अंतरीप बनाते हैं. इस क्षेत्र से दमनगंगा नदी बहती है और अरब सागर मे इस नदी के मुहाने पर दमन नगर स्थित है यहा का औसत दैनिक अधिकतम तापमान जनवरी में 29°से. से मई में 34°से. तक होता है. जून और सितंबर के बीच होने वाली सालाना औसत वर्षा 2,057 मिमी है. दीव के क्षेत्र में मुख्यभूमि का इलाका शामिल है, जो एक संकरी, दलदली खाड़ी द्वारा काठियावाड़ प्रायद्वीप से अलग है इस द्वीप का काफ़ी बड़ा भाग नमक, गाद और रेत से ढका है. तापमान दमन जैसा ही है, लेकिन यहां वर्षा काफ़ी कम, 584 मिमी वार्षिक होती है.

दमन और दीव के अधिकतर लोग हिंदू हैं, कुछ मुसलमान और ईसाई अल्पसंख्यक भी है. दोनों ज़िलों की मुख्य भाषा गुजराती है. दमन और दीव की अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार कृषि और मत्स्यपालन है. चावल, रागी, दालें और सेम दमन की मुख्य फ़सले हैं. लेकिन दीव में कुल भूमि के सिर्फ पांचवें हिस्से पर फ़सल उगाई जाती है; यहा बाजरा एवं गेहूं जैसी फ़सलें उगाई जाती हैं, क्योंकि वे दीव की शुष्क जलवायु के ज़्यादा अनुकूल हैं.

उद्योगो का अब यहा विकास हो रहा है तथा गोवा औद्योगिक विकास निगम उन्हे प्रोत्साहन दे रहा है. दमन और दीव नगर व्यावसायिक एवं सेवा केंद्र है; यहां शैक्षणिक संस्थाए भी विकसित हो रही है.

दमन एवं दीव– प्रत्येक, एक प्रशासनिक जिले के रूप मे संगठित है और दोनो मिलकर केंद्रशासित प्रदेश का निर्माण करते हैं, जिसका प्रमुख केंद्र सरकार द्वारा नियुक्त प्रशासक (गोवा का राज्यपाल) होता है.

इतिहास

दमन नाम शायद दमनगंगा नदी से लिया गया है, जबकि दीव संस्कृत शब्द द्वीप से बना है मौर्य काल (तीसरी सदी ई.पू.) से दोनो पश्चिमी भारत के विभिन्न क्षेत्रीय एवं स्थानीय शासकों के अधीन रहे. 13वीं सदी में दमन रामनगर राज्य का हिस्सा बना, जो बाद मे गुजरात के सुल्तानों का उपराज्य बना. इसी प्रकार 15वी सदी के शुरू मे गुजरात सल्तनत के अधीन आने से पहले दीव पर काठियावाड़ (सौराष्ट्र) के कई राजवंशों का शासन रहा.

पुर्तगालियों ने हिंद महासागर में व्यापार पर नियंत्रण की अपनी महत्त्वाकांक्षी योजना के तहत दमन और दीव, दोनों पर अधिकार किया. 1535 में गुजरात के बहादुर शाह के साथ हुई संधि के अंतर्गत पुर्तगालियों ने दीव में एक दुर्ग का निर्माण किया, क्योंकि यह भारत और मध्य–पूर्व के बीच समृद्ध वाणिज्यिक एवं तीर्थयात्रा मार्गों का एक महत्त्वपूर्ण बदरगाह था. 1550 के दशक के मध्य तक खंभात की खाड़ी के बंदरगाहों मे आने और जाने के समय गुजरात के जहाज़ों को पुर्तगाली शुल्क अदा करने के लिए दीव रुकना पड़ता था. अपने डॉक एवं पोत–निर्माण कारख़ानों के लिए प्रसिद्ध दमन (पुर्तगाली में दमाओं) को पुर्तगालियों ने 1559 में जीत लिया. पुर्तगालियों के विदेशी प्रात *एस्तादो द इंडिया* (भारतीय राज्य) के हिस्से के रूप में ये दोनों क्षेत्र गोवा के गवर्नर–जनरल के अधीन हो गए. ये चार शताब्दी से अधिक समय तक पुर्तगाली शासन में रहे, हालांकि एशिया में पुर्तगाली साम्राज्य के पतन से इनका सामरिक महत्त्व काफी कम हो गया था. 1961 में भारत का हिस्सा बनने तक दमन और दीव पुर्तगाली विदेशी क्षेत्र की चौकियों के रूप में अस्तित्व मे रहे. दीव को उसके भव्य कैथॅड्रल ऑफ से मात्रीज़ तथा उसकी प्राकृतिक सुंदरता के लिए जाना जाता है. जनसंख्या (2001) केंद्रशासित प्रदेश दमन और दीव 1,58,059.

दमोह

नगर, मध्य मध्य प्रदेश राज्य, मध्य भारत. हिंदू पौराणिक कथाओ के राजा नल की पत्नी दमयंती के नाम पर इसका नाम पडा. अकबर के साम्राज्य मे यह मालवा सूबे का हिस्सा था दमोह के अधिकतर प्राचीन मंदिरों को मुग़लों ने नष्ट किया तथा इनकी सामग्री एक क़िले के निर्माण में प्रयुक्त की गई. इस नगर में शिव, पार्वती एवं विष्णु की मूर्तियों सहित कई प्राचीन प्रतिमाएं हैं यहां दो पुरानी मस्जिदें, कई घाट और जलाशय (जैसे

दया

ताल एव फुटेरा ताल) हैं. दमोह का 14वीं सदी में मुसलमानों के तहत महत्त्व बढ़ा
ह मराठा प्रशासकों का केंद्र भी रहा. 1867 में इसे नगरपालिका बनाया गया.

जिले का एक महत्त्वपूर्ण कृषि केंद्र तथा व्यावसायिक नगर है. इसके उद्योगों मे
न पेराई, हथकरघा बुनाई और रगाई तथा कांसे एवं मिट्टी के बर्तन निर्माण से
व्यवसाय शामिल हैं. यहां बीड़ी के कुछ कारख़ाने और सोना एवं चांदी की
ालाएं भी हैं यह जबलपुर संभाग का महत्त्वपूर्ण थोक एवं खुदरा खाद्यान्न विपणन
ै. दमोह के आसपास पान के कई बाग़ान हैं और पत्तियों का निर्यात होता है
ागपंचमी पर वार्षिक मेले तथा जनवरी में जटाशंकर मेले का आयोजन होता है.
सिक नगर दमोह के आसपास का इलाक़ा पुरातत्त्व की दृष्टि से समृद्ध है, जहां
एवं रोंड जैसे प्राचीन स्थल हैं नगर में साप्ताहिक पशु हाट लगता है. दमोह मे
ास्पताल तथा सागर विश्वविद्यालय से संबद्ध महाविद्यालय हैं. जनसंख्या (2001)
1,12,160, ज़िला कुल 10,81,909.

दयानंद सरस्वती

जन्म का नाम मूलशंकर, (ज.–1824, टंकारा, गुजरात, भारत; मृ.–30 अक्तू. 1883, अजमेर, राजपूताना {वर्तमान राजस्थान}, भारत). हिंदू संत और समाज सुधारक, जिन्होंने आर्य समाज की स्थापना (1875) की, जो एक हिंदू सुधार आंदोलन था, जिसने भारत के प्राचीनतम ग्रंथ, वेदों की लौकिक और आध्यात्मिक शक्ति की ओर लौटने की वकालत की

दयानद की प्रारंभिक शिक्षा एक संपन्न ब्राह्मण परिवार के अनुरूप हुई. 14 वर्ष की आयु में वह अपने पिता के साथ शिव मंदिर मे रात्रि जागरण के लिए गए. उनके पिता तथा अन्य लोग जब सो गए, तो शिवलिंग पर चढ़े फल और मिठाई से आकर्षित होकर एक चूहा पहुंचा और शिवलिंग के ऊपर भाग–दौड़कर
ापवित्र करने लगा इस अनुभव से किशोर मूलशंकर के मन में मूर्ति पूजा के
श्वास के प्रति घोर प्रतिक्रिया उत्पन्न हुई. पांच वर्ष बाद अपने प्रिय चाचा की मृत्यु से
धार्मिक अविश्वास और मज़बूत हो गए. मृत्यु पर विजय पाने की चेष्टा में वह पहले
मानसिक और शारीरिक क्रियाओं को अनुशासित करने की पद्धति) की ओर गए. अपने
की तैयारी होते देख वह घर छोड़कर सरस्वती तपस्वियों में शामिल हो गए.

15 वर्ष (1845–60) उन्होंने सत्य की खोज में समूचे भारत की यात्रा की और
स्वामी बिरजानद के शिष्य बन गए. उनके गुरु ने उनका नाम दयानंद रखा और
य गुरुदक्षिणा लेने की जगह उनसे वचन लिया कि वह अपना जीवन वैदिक हिंदू
ी पुनर्स्थापना मे लगाएगे, जैसा भारत में बौद्ध काल से पहले था.

द के विचारों ने बहुत से लोगों का ध्यान पहली बार तब खीचा, जब उन्होंने बनारस
ाराजा की अध्यक्षता में बनारस (वर्तमान वाराणसी) में हिंदू धर्म के पुरातनपंथी
के साथ शास्त्रार्थ किया. आर्य समाज (आर्यों {उच्च कुलीनों} का समाज) की

स्थापना के लिए पहली बैठक बबई (वर्तमान मुबई) मे 10 अप्रैल 1875 को हुई. हालांकि वेदों की सर्वोच्च सत्ता के बारे मे दयानंद के कुछ दावों में अतिरेक लगता है (बिजली के इस्तेमाल जैसी आधुनिक उपलब्धियो के लिए उनका दावा है कि इनका वेदों मे वर्णन है). उन्होंने अनेक महत्त्वपूर्ण सामाजिक सुधारों को बढावा दिया उन्होंने बाल विवाह का विरोध किया, विधवा विवाह का समर्थन किया, सभी जातियों को वेदो के अध्ययन का अधिकारी बताया और अनेक शिक्षण और लोकार्थ सस्थानों की स्थापना की आर्य समाज ने भारतीय राष्ट्रवाद की भावना को फिर से जगाया, लेकिन देश के कुछ भागों में हिदू–मुस्लिम द्वेष भी इस कारण भडका.

सार्वजनिक रूप से एक महाराजा की कडी आलोचना किए जाने के बाद कुछ ऐसी परिस्थितियों में दयानंद की मृत्यु हो गई कि माना जाता है कि महाराजा के एक समर्थक ने उन्हें जहर दे दिया था; लेकिन यह आरोप अदालत में कभी सिद्ध नहीं हो सका

दरभंगा

शहर, उत्तरी–मध्य बिहार राज्य, पूर्वोत्तर भारत. यह गंगा की सहायक नदी बागमती के ठीक पूर्व में स्थित है. यह शहर 16वीं सदी में स्थापित दरभंगा राज की राजधानी था. यहा आनदबाग महल है. 1864 में इसे नगरपालिका बनाया गया. दरभंगा के महल में कामेश्वर सिंह दरभगा संस्कृत विश्वविद्यालय (1961) स्थित है, यहां पुरातत्व सामग्री तथा ऐतिहासिक एवं हस्तशिल्प कलाकृतियों का एक सग्रहालय भी है. दरभगा भारतीय शास्त्रीय संगीत की एक विशेष शैली के लिए जाना जाता है, जिसकी विशेषताएं ध्रुपद एव धमार हैं. यह दरभंगा संभाग और दरभगा जिले का मुख्यालय है और यहां एक मेडिकल कॉलेज, चंद्रधारी मिथिला महाविद्यालय एवं ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय है

यह शहर एक विशाल जलोढ़ मैदान में स्थित है, जिसके निचले इलाक़ों में दलदल एवं झीले है. एक प्रमुख सडक एवं रेल जंक्शन दरभंगा में कृषि उत्पादों, आम और मछली का व्यापार होता है. खाद्य प्रसंस्करण के अलावा यहां मध्यम उद्योग भी चलते हैं. अनाज, तिलहन, तबाकू, गन्ना और आम इस क्षेत्र की महत्त्वपूर्ण फ़सलें हैं. जनसख्या (2001) न.नि. क्षेत्र 2,66,834; ज़िला कुल 32,85,473.

दर्दीय भाषाएं

दार्द या पिशाच भाषा भी कहा जाता है, पाकिस्तान, कश्मीर और अफ़गानिस्तान में बोली जाने वाली अंतर्संबंधित भारतीय–ईरानी भाषाओं का समूह. इन्हें आमतौर पर तीन उपसमूहो मे विभक्त किया जाता है, काफ़िरी या पश्चिमी; खोवारी या मध्य (पश्चिमोत्तर पाकिस्तान के चित्राल जिले मे प्रयुक्त); और पूर्वी, जिसमे शिणा और कश्मीरी शामिल हैं (कुछ विद्वान दर्दीय शब्द का इस्तेमाल केवल पूर्वी उपसमूह की भाषाओं के लिए करते हैं और समूचे समूह के लिए पिशाच शब्द का प्रयोग करते हैं).

भारतीय–ईरानी भाषा परिवार में दर्दीय भाषाओं की सही स्थिति विद्वानों के बीच विवाद का विषय रही है. कुछ विद्वान मानते है कि ये भाषाएं भारतीय–ईरानी भाषाओ के अविशिष्ट चरण से उत्पन्न हुई हैं; अन्य लोगों का मानना है कि पूर्वी और खोवारी समूह भारतीय–आर्य भाषाएं हैं, जबकि काफिरी उपसमूह अलग है.

कश्मीरी एकमात्र दर्दीय भाषा है, जिसका साहित्यिक कृतियो के लिए व्यापक उपयोग होता है. शिणा के अलावा पूर्वी उपसमूह की भाषाएं दक्षिण में बोली जाने वाली भारतीय–आर्य भाषाओं के प्रभाव के कारण काफी बदल चुकी हैं. दर्दीय भाषाएं अपनी ध्वनि प्रणाली तथा वैदिक संस्कृत के काल के बाद भारत और ईरान में लुप्त हो चुके कई शब्दों के संरक्षण के मामले मे भारतीय–ईरानी भाषाओं से भिन्न हैं.

दर्शन

(अर्थात देखना, इस शब्द ने धार्मिक–दार्शनिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण 'वास्तविकता की अंतर्दृष्टि' और 'शुभदर्शन' के दो अतिरिक्त अर्थ प्राप्त कर लिए हैं). भारतीय धर्म और सामाजिक विचार–विमर्श में दूसरा अर्थ शुभ देवता, व्यक्ति या वस्तु के दर्शन के लिए प्रयुक्त होता है. इस अनुभव का परिणाम दर्शक के लिए आशीर्वाद समझा जाता है भगवान को जुलूस में गली बाज़ारों मे से ले जाने वाली रथयात्राओं से उन जातियो के लोगों को भी दर्शन लाभ मिलता है, जो पुराने समय में मंदिर में प्रवेश नहीं कर सकते थे. दर्शन कर पाने का सामर्थ्य गुरु अपने शिष्यों को, शासक अपनी प्रजा को और तीर्थयात्रा तथा मंदिर जैसे पवित्र स्थान अपने श्रद्धालुओं को प्रदान करते है

वास्तविक अंतर्दर्शन के रूप में दर्शन या दृष्टिकोण का अर्थ है, किसी विषय के विचार में मूल प्रकृति की विभिन्न विचारधाराएं. विशेषतः दर्शनशास्त्र या धार्मिक सिद्धांत मे इसका अभिप्राय विभिन्न प्रणालियों से होता है, जिसमें प्रत्येक का अपना दृष्टिकोण है और प्रत्येक के प्रामाणिक ग्रंथों की अपनी व्याख्या है. आमतौर पर माना जाता है कि ऐसे छह दर्शन हैं, जो सभी रूढ़िवादी है : सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमासा और वेदांत, परंतु कुछ अन्य जैसे बौद्ध धर्म, जैन धर्म और भौतिकतावादी चार्वाक जैसे असनातनी दर्शनों का भी उल्लेख है.

दलाई लामा

तिब्बत के प्रभावशाली गे लुग् पा (पीला टोप) बौद्धों के प्रमुख, जो 1959 तक तिब्बत के आध्यात्मिक और लौकिक शासक रहे.

इस परंपरा में सबसे पहले गेदु न् डुब् पा (1391–1475) हुए, जो मध्य तिब्बत मे टाशिल्हुन् पो मठ के संस्थापक और मठाधीश थे. 14वी शताब्दी में विकसित हुए लामाओ के पुनर्जन्म में विश्वास के अनुसार, उनके उत्तराधिकारियो को उनका पुनर्जन्म समझा जाने लगा और उन्हें करुणामय बोधिसत्व, अवलोकितेश्वर का अवतार, माना जाने लगा.

13वें दलाई लामा, थुब् तन् ग्याछो (1875–1933) का निजी आधिपत्य विशाल था. 1912 में चीन में सत्तारूढ मांचू वंश के ख़िलाफ़ सफल विद्रोह ने तिब्बतियों को विभाजित चीनी सैनिकों को पराजित करने का अवसर दिया और दलाई लामा स्वायत्त राज्य के प्रमुख के रूप मे शासक बन गए.

14वें दलाई लामा तंजिन ग्याछो का जन्म 1935 मे चीन के शंघाई प्रांत में तिब्बती परिवार में हुआ था. वह 1940 मे गद्दी पर बैठे, लेकिन 1959 में उन्हें एक लाख अनुयायियों के साथ भारत मे शरण लेनी पडी. उस वर्ष तिब्बत के लोगों ने 1950 से वहां क़ब्जा जमाए साम्यवादी चीन की सेनाओ के खिलाफ़ असफल विद्रोह किया था. दलाई लामा ने भारत में हिमालय पर्वत पर धर्मशाला में निर्वासित सरकार का गठन किया. तिब्बत में चीन की प्रभुता समाप्त करने के लिए उनके अहिंसक आंदोलन को मान्यता देते हुए उन्हें 1989 में नोबेल शांति पुरस्कार प्रदान किया गया. उन्होंने तिब्बती बौद्ध धर्म पर कई पुस्तकों और अपनी आत्मकथा की रचना की है.



चौदहवें दलाई लामा दिल्ली में एक प्रार्थना सभा नेतृत्व करते हुए
सौजन्य : *हिंदुस्तान टाइम्स*

दलित

(मराठी शब्द, अर्थात वह जिसे तोडा गया हो), भारतीय इतिहास मे दमित अथवा शोषित, जाति व्यवस्था के परित्याग और अछूत, हरिजन या अनुसूचित जाति जैसे पूर्ववर्ती संबोधनो का विकल्प, जिन्हें अपमानजनक माना जाता था. 1970 के दशक में यह नाम महाराष्ट्र में एक छोटे समूह द्वारा चुना गया था, जो दमन के विरुद्ध अपनी आवाज़ उठाना चाहता था, लेकिन जाति की अवधारणा को वंशानुक्रम से जुड़ा नहीं देखना चाहता था. दलितों के नेताओं में से एक थे, बी.आर. अंबेडकर (हरिजनों, अछूतों के नेता और भारत सरकार के विधि मंत्री, 1947–51).

मानवाधिकारों की अपनी लड़ाई में दलितों का इस सहस्राब्दी के लिए नारा है 'जाति को उखाड फेंको.' दलित महिलाओ पर अत्याचार, जाति के आधार पर भेदभाव और छुआछूत की निंदा आंदोलन के मुख्य मुद्दे हैं. भारत के कुछ राज्यों में दलित शक्ति एक प्रमुख राजनीतिक कारक बन गई है

दलीप सिंह

(ज.–सितं. 1837, लाहौर {वर्तमान पाकिस्तान मे}; मृ.–22 अक्तू. 1893, पेरिस), बचपन मे (1843–49) लाहौर के सिक्ख महाराजा.





दलीप लाहौर के शेर ए पंजाब रणजीत सिंह के पुत्र थे जिन्होंने करीब 50 वर्ष तक पंजाब पर शासन किया. रणजीत सिंह की मृत्यु (1839) के बाद हत्याओं और सत्ता हथियाने के संघर्षों का दौर चल पड़ा, लेकिन बालक दलीप की मां रानी जिन्दां 1843 में दलीप को महाराजा घोषित कराने मे कामयाब हो गई, हालांकि वास्तविक सत्ता उनके भाई जवाहर सिंह और उनके ब्राह्मण प्रेमी के हाथों में ही रही. सिक्ख सेना दिन–प्रतिदिन अपनी ताकत बढ़ा रही थी, उसने विदेशी अधिकारियों को बर्खास्त कर दिया और अपने सैन्य बल को 1839 के मुकाबले 1845 में दुगुना कर 70 हज़ार से भी अधिक कर लिया, तभी ब्रिटिश शासन के खिलाफ पहला सिक्ख युद्ध भड़क उठा 1846 की शांति संधि में दलीप को एक घटे हुए सिक्ख साम्राज्य का महाराजा मान लिया गया और उन्हें भारत की ब्रिटिश सरकार का आश्रित बना दिया गया, लाहौर स्थित रेजिडेंट महाराजा दलीप सिंह के नाम से शासन चलाता था.

1848 में एक ब्रिटिश–विरोधी विद्रोह मुल्तान में और दूसरा हजारा में भड़का, इन्हें व्यापक सिक्ख विद्रोहों का रूप लेने दिया गया, इसी कारण दूसरा सिक्ख युद्ध (1848–49) हुआ. गुजरात के युद्ध (21 फर. 1849) में सिक्खों की हार हुई और मार्च में महाराजा को हटाकर उनके राज्य को ब्रिटिश भारत में मिला लिया गया. उन्हें 12,000 पाउंड की सालाना पेंशन दी गई और वह ईसाई बन गए व उन्होंने इंग्लैंड में रहने का फैसला किया जहां उच्च समाज ने उनका स्वागत किया. 1882 मे पेंशन बढ़ाने की अपील नामंजूर किए जाने पर वह इंग्लैंड से फ्रांस चले गए और ईसाई धर्म भी छोड़ दिया.

दशनामी संन्यासी

आठवीं शताब्दी में दार्शनिक शंकर द्वारा स्थापित 10 संप्रदायों (दशनाम– 10 नाम) से संबंधित हिंदू शैव तपस्वी. 10 संप्रदाय हैं : अरण्य, आश्रम, भारती, गिरि, पर्वत, पुरी, सरस्वती, सागर, तीर्थ और वन. इनमें से प्रत्येक संप्रदाय शंकर द्वारा भारत के उत्तर, दक्षिण, पूर्व और पश्चिम भाग में स्थापित चार मठों के साथ संबंधित है. ये मठ हैं, ज्योति (जोशी) मठ (हरिद्वार के निकट बद्रीनाथ, उत्तरांचल), श्रृंगेरी मठ (कर्नाटक); गोवर्धन मठ (पुरी, उड़ीसा) और शारदा मठ (द्वारका, गुजरात). मठों के प्रमुखों को महल कहते हैं (श्रृंगेरी मठ के प्रमुख को जगद्गुरु कहते हैं); सिद्धांतों के बारे में उनसे परामर्श किया जाता है और आम हिंदू तथा उनके अनुयायी तपस्वी उन्हें सर्वाधिक सम्मान देते हैं

दशनामी संन्यासी विशेष प्रकार के गेरुआ वस्त्र पहनते हैं और यदि प्राप्त कर सके तो अपने कंधे पर बाघ या शेर की खाल का आसन रखते हैं. वह माथे तथा शरीर के अन्य भागों पर श्मशान की राख से तीन धारियों का तिलक लगाते हैं और गले में 108 रुद्राक्षों की माला पहनते है. वे अपनी दाढ़ी बढ़ने देते हैं और बाल खुले रखते हैं, जो कंधों तक आते हैं या उन्हें सिर के ऊपर बांधते है.

कुछ कट्टर दशनामी निर्वसन रहते हैं. उन्हे नागा (नग्न) संन्यासी कहा जाता है और वे तपस्वियों में सबसे अधिक उग्र होते हैं पुराने समय में नागा संन्यासी अन्य मतो, हिंदुओं और मुसलमानो, दोनो के साथ युद्ध में उलझ जाया करते थे.

दशम ग्रंथ


दशम ग्रंथ के रचयिता गुरु गोबिंद सिंह

पूर्ण रूप मे 10वें पादशाह का ग्रंथ, (पंजाबी मे, 10वें शहशाह [आध्यात्मिक नेता] की पुस्तक), सिक्खों के 10वें आध्यात्मिक नेता गुरु गोबिंद सिंह की कृतियों का संकलन. यह ब्रजभाषा, हिंदी, फ़ारसी और पंजाबी में लिखे भजनों, दार्शनिक लेखों, हिंदू कथाओं, जीवनियों और कहानियों का संकलन है. विद्वान इस समूचे लेखन की प्रामाणिकता को स्वीकार नहीं करते और मानते है कि यह गुरु गोबिंद सिंह की रचनाओं के अतिरिक्त उनके समकालीन अन्य कवियो की रचनाओं को एकत्रित करके बनाया गया है. हालांकि कुछ पदों का प्रयोग सिक्ख पूजा और अनुष्ठानों में किया जाता है, परंतु इसे सिक्खो के प्रमुख धार्मिक ग्रंथ, *आदि ग्रंथ,* जितना आदर नहीं दिया जाता.

दसवंत

(उत्कर्ष– 16वीं शताब्दी, भारत), प्रख्यात भारतीय मुग़ल चित्रकार, जिनका उल्लेख अकबर के दरबार के इतिहासकार अबुल फ़ज़ल अल्लामी ने 'अपने समय का पहला अग्रणी कलाकार' के रूप में किया है, जिन्होंने अपने समकालीन चित्रकारों को पीछे छोड़ दिया.

दसवंत के जीवन के बारे में बहुत कम जानकारी उपलब्ध है. अनुमान है कि वह हिंदू थे और संभवतः किसी साधारण परिवार से थे. वह अकबर के संपर्क में आए और अकबर ने ही उन्हें फारसी चित्रकार अब्दुस्समद के पास प्रशिक्षण के लिए भेजा. आज ऐसे बहुत कम पुस्तक चित्रांकन उपलब्ध हैं, जिन पर उनका नाम है और इनमें से अधिकांश जयपुर के *रज़्मनामा* (*महाभारत* का फ़ारसी नाम) के चित्रात्मक संस्करणों में है. ये वे कृतियां हैं, जिनकी रूपरेखा दसवंत ने बनाई थी और चित्र उनके सहयोगियों ने बनाए थे. क्लीवलैंड म्यूज़ियम ऑफ़ आर्ट्स में रखे *तूतीनामा* (तोते की कहानियां) की पांडुलिपि ही एकमात्र चित्रांकन है, जिस पर उन्होंने अकेले काम किया था. उनकी जो भी कृतियां बची हैं, उनकी प्रतिष्ठा को सिद्ध करने के लिए पर्याप्त है. अस्थिर मानसिक स्थिति मे विक्षिप्तता का दौरा पड़ने पर दसवंत ने आत्महत्या कर ली थी.

दहेज

संपत्ति, जो विवाह के समय वधू या वधू के परिवार की तरफ से वर को दी जाती है. यूरोप, भारत, अफ़्रीका और दुनिया के अन्य भागों में दहेज प्रथा का लंबा इतिहास है.

भारत मे इसे *दहेज, हुंडा* या *वरदक्षिणा* के नाम से जाना जाता है तथा वधू के परिवार द्वारा नक़द या वस्तुओं के रूप में यह वर के परिवार को वधू के साथ दिया जाता है.

संभवतः इस प्रथा को उन समाजो में महत्त्व प्राप्त हुआ होगा, जहां छोटी उम्र में विवाह प्रचलित रहे होंगे. दहेज का उद्देश्य नवविवाहित पुरुष को गृहस्थी जमाने में मदद करना था, जो अन्य आर्थिक ससाधनों के अभाव मे शायद वह स्वय नहीं कर सकता था. कुछ समाजों में दहेज का एक अन्य उद्देश्य था, पति की अकस्मात मृत्यु होने पर पत्नी को जीवन निर्वाह में सहायता देना. दहेज के पीछे एक अवधारणा यह भी रही होगी कि पति, विवाह के साथ आई जिम्मेदारियों, विशेषकर शेष जीवन में अपनी पत्नी के पालन की जिम्मेदारी का निर्वाह ठीक तरह से कर सके वर्तमान युग में भी दहेज नवविवाहितो के जीवन–निर्वाह में मदद के उद्देश्य से ही दिया जाता है.

एक प्रतिरोधी प्रथा है 'वधू–मूल्य', वधू के परिवार द्वारा उसके बदले बहुमूल्य नकद या वस्तुओं की प्राप्ति. अतः वधू–मूल्य एक प्रकार का विनिमय है. दहेज और वधू–मूल्य के बारे में एक विशिष्ट तथ्य यह है कि दहेज ऊची जातियों में प्रचलित है, जबकि वधू–मूल्य प्रधानतः निम्न जातियो और जनजातियों (आदिवासियो) में प्रचलित है वधू–मूल्य के बारे में यह तर्क है कि जाति व्यवस्था में निम्न जातियां (वैश्य और शूद्र) अधिकांश शारीरिक एवं तुच्छ समझे जाने वाले कार्य करती हैं, परिवार में आने वाली एक वधू का अर्थ है, आय एवं कार्य के लिए अतिरिक्त श्रम, जबकि दुल्हन के परिवार में एक कमाने वाले सदस्य की कमी हो जाती है इसलिए वधू–मूल्य द्वारा इसकी क्षतिपूर्ति की जाती है.

दहेज का प्रयोग अक्सर न केवल विवाह के लिए स्त्री की वांछनीयता बढ़ाने के लिए हुआ है, बल्कि बड़े परिवारों मे यह सत्ता और सपत्ति बढाने और कई बार राज्यो की सीमा व नीतियों के निर्धारण का कारण बना है.

इस प्रथा के अनेक सामाजिक–आर्थिक प्रभाव हैं तथा इसके कई सुनिश्चित विपरीत परिणाम हैं. यद्यपि दहेज प्रथा दुनिया के अनेक देशों मे प्रचलित है, परंतु भारत मे इसने संकटपूर्ण स्थितियां निर्मित कर दी हैं. ढिढोरा पीटा जाता है कि दहेज लेना या देना सामाजिक अपराध है और क़ानून द्वारा इसे प्रतिबंधित भी किया गया है, लेकिन यह बुराई जारी है समाज के पढ़े–लिखे वर्ग में भी विवाह तय करते समय इसे चर्चा का आवश्यक अंग बनाया जाता है विवाह के समय दहेज की वस्तुओं को सामाजिक हैसियत के रूप में प्रदर्शित किया जाता है वर–वधू के परिवारों के बीच कई बार दहेज को लेकर सहमति न होने पर रिश्ते टूट जाते हैं.

इस प्रथा के वीभत्स प्रमाण है, प्रताड़ना की घटनाएं, जो अतत नवविवाहित वधुओं की 'दहेज हत्या' के रूप में परिणत होती हैं. लड़कियों के साथ बुरे बर्ताव, भेदभाव तथा कन्या भ्रूण और कन्या शिशुओ की हत्या जैसे जघन्य कृत्यों के रूप में सामने आने वाले इसके दुष्परिणाम दहेज प्रथा की उस क्रूरता को प्रदर्शित करते हैं, जिसका सामना समाज को अब भी करना है

दादरा व नगर हवेली

केंद्रशासित भारतीय क्षेत्र, गुजरात व महाराष्ट्र के बीच भारत के सुदूर पश्चिमी हिस्से मे अरब सागर से 24 किमी की दूरी पर, मुंबई से 129 किमी उत्तर में. इसके दो भाग है तीन गांवों वाला दादरा और 69 गावों वाली नगर हवेली. इसका कुल क्षेत्रफल 491 वर्ग किमी है और सिलवासा इसकी राजधानी है.

भौतिक एवं मानव भूगोल

दादरा एवं नगर हवेली का भूभाग लहरदार व पहाडी है और यह पश्चिमी घाट के समीप पूर्व व पूर्वोत्तर में 305 मीटर की ऊंचाई तक उभरा हुआ है. निम्नभूमि क्षेत्र मध्यवर्ती मैदानों तक सीमित है, जिसे दमनगंगा और उसकी सहायक नदिया काटती हैं. दादरा व नगर हवेली में नौकाओं के संचालन योग्य सिर्फ़ एक दमनगगा नदी है, जो महाराष्ट्र से निकलती है और पश्चिमोत्तर में अपनी गोदी के लिए प्रसिद्ध रहे दमन बदरगाह के क्षेत्र से होकर बहती है.

इस क्षेत्र की जलवायु विशिष्ट है, ग्रीष्म ऋतु में अत्यधिक गर्मी (मई के मध्य में तापमान 34° से. तक पहुंच जाता है) पडती है. वार्षिक वर्षा औसतन लगभग 3,050 मिमी होती है और यह ज़्यादातर जून व सितंबर के बीच होती है. इस क्षेत्र का लगभग 40 प्रतिशत भूभाग वनाच्छादित है.

कुल जनसंख्या का लगभग 4/5 भाग आदिवासी जनजाति के लोग हैं, जिनमें ज्यादातर वर्ली, ढोडिया और कोंकण हैं. ये लोग विभिन्न प्रकार की जनजातीय बोलियां बोलते हैं. अधिकतर आदिवासी ग्रामीण इलाक़ों में रहते हैं और कृषि व पशुपालन व्यवसाय करते हैं. खेती यहां का मुख्य पेशा है और यह ज़्यादातर सीढ़ीदार खेती है. चावल और रागी यहां की मुख्य खाद्य फ़सले हैं. गेहूं और गन्ना भी उगाया जाता है. पडोसी राज्य गुजरात में दमनगंगा जलाशय परियोजना के पूर्ण होने पर इस क्षेत्र की सिंचाई में महत्त्वपूर्ण विकास होने की संभावना है. इस इलाक़े में गुजराती और मराठी भी बोली जाती है यहां पर हिंदुओं की संख्या अधिक है, हालांकि कुछ ईसाई और मुस्लिम अल्पसख्यक भी हैं.

इमारती लकड़ी का उत्पादन मुख्यत. यहां के स्थानीय बहुमूल्य सागौन पर निर्भर करता है यहां पर बड़े उद्योग बहुत कम है. पिपरिया, मस्साते, खाडोली और कुछ अन्य स्थानों पर स्थापित उद्योगों में इंजीनियरिंग के सामान, प्लास्टिक, रसायन और उर्वरकों का उत्पादन होता है. औद्योगिक विकास स्थानीय आबादी को लाभ पहुंचाने के बजाय मजदूरों की बाढ लाने के रूप में फलित हुआ है.

गोवा के राज्यपाल के सचिव की सहायता से एक ज़िलाधिकारी दैनिक मामलों की देखरेख करता है और एक 26 सदस्यीय निर्वाचित परिषद परामर्शदात्री समिति के रूप मे काम करती है.

इतिहास

दादरा व नगर हवेली का मध्य काल से पूर्व का इतिहास अभी तक अस्पष्ट है. 1262 में एक राजपूत आक्रमणकारी ने इस क्षेत्र के कोली सरदारों को पराजित किया और रामनगर का शासक बना. रामनगर एक छोटा राज्य था, जिसमे नगर हवेली भी शामिल था. 18वी सदी के मध्य में मराठों द्वारा नगर हवेली को हासिल किए जाने तक यह क्षेत्र राजपूत शासन के अधीन रहा.

18वीं सदी के उत्तरार्द्ध में दादरा व नगर हवेली पुर्तगाली शासन के अधीन आया 1783 में मराठों ने अपनी नौसेना द्वारा एक पुर्तगाली जहाज़ को क्षतिग्रस्त करने के एवज मे मुआवज़े के तौर पर नगर हवेली को पुर्तगालियो को सौंप दिया.

दो साल बाद पुर्तगालियों ने एक प्रकार की जागीर बन चुके दादरा को हासिल कर लिया 1947 में भारत द्वारा स्वतत्रता प्राप्त करने के बाद गोवा के राष्ट्रवादियो ने पुर्तगाल से अलग होने की माग रखी और 21 जुलाई 1954 की रात दादरा का अधिग्रहण उनकी पहली सफलता थी. इसके दो सप्ताह बाद ही नगर हवेली पर उनका क़ब्ज़ा हो गया. इन क्षेत्रो में भारत समर्थक प्रशासन की स्थापना की गई और 1 जून 1961 को इसने भारतीय संघ से अपने विलय के लिए निवेदन किया. भारत सरकार स्वतंत्रता के दिनों से ही इस क्षेत्र के संघ में शामिल होने के बारे में जानती थी, लेकिन आधिकारिक तौर पर इसकी घोषणा 11 अगस्त 1961 को की गई. जनसंख्या (2001) कुल केंद्रशासित क्षेत्र 2,20,451, ग्रामीण 1,69,995; शहरी 50,456.

दादू

(ज –1544, अहमदाबाद, गुजरात, भारत, मृ.–1603, नारायणा, राजस्थान, भारत), भारतीय संत, जिन्होंने दादू पंथ नामक संप्रदाय की स्थापना को प्रेरित किया

दादू पेशे से धुनिया थे और बाद में वह धार्मिक उपदेशक तथा घुमक्कड़ बन गए. वह कुछ समय तक सांभर व आंबेर और अतत नारायणा में रहे, जहां उनकी मृत्यु हुई ये सभी स्थान जयपुर तथा अजमेर (राजस्थान राज्य) के आसपास है. उन्होंने वेदो की सत्ता, जातिगत भेदभाव और पूजा के सभी विभेदकारी आडंबरों को अस्वीकार किया इसके बदले उन्होंने जप (भगवान के नाम की पुनरावृत्ति) और आत्मा को ईश्वर की दुल्हन मानने जैसे मूल भावों पर ध्यान केंद्रित किया. उनके अनुयायी शाकाहार और मद्यत्याग पर जोर देते हैं और संन्यास दादू पंथ का एक अनिवार्य घटक है. दादू के उपदेश मुख्यत काव्य सूक्तियों और ईश्वर भजन के रूप में हैं, जो 5,000 छंदों के संग्रह में संगृहीत है, जिसे बानी (वाणी) कहा जाता है ये अन्य संत कवियों, जैसे कबीर, नामदेव, रविदास और हरिदास की रचनाओं के साथ भी किंचित परिवर्तित छद संग्रह *पंचवाणी* में शामिल हैं. यह ग्रंथ दादू पंथ के धार्मिक ग्रथों में से एक है

लग अपना आप न जाने
व लग कथनी काची
ापा जाने साइं कोन
े तब कथनी सब साची

तक तुम स्वयं को नही जानोगे, तब म ईश्वर को नहीं पा सकते; सच यह ईश्वर की अनुभूति केवल तब हो है जब तुम स्वय को जान लो) काव्य से लिया गया एक दोहा

दानापुर

दीनापुर निज़ामत भी कहलाता है, नगर, उत्तरी बिहार राज्य, पूर्वोत्तर भारत, गंगा नदी के तट पर. यह एक प्रमुख सड़क एवं रेल जंक्शन तथा कृषि व्यापार केंद्र है. उद्योगों में मुद्रण, तिलहन पेराई, एव धातुकर्म से जुडे उद्योग शामिल हैं. यहां मगध विश्वविद्यालय से संबद्ध एक महाविद्यालय तथा सैनिक छावनी है. दानापुर को 1887 में नगरपालिका बनाया गया. जनसंख्या (2001) छावनी क्षेत्र 28,149; नगर 1,30,339

दामोदर नदी

पूर्वोत्तर भारत की नदी, जो अपनी कई सहायक नदियों, विशेषकर बोकारो और कुनार के साथ दक्षिण–मध्य बिहार राज्य के छोटा नागपुर पठार से निकलती है. 592 किमी तक यह सामान्यत. पूर्व की ओर बहती है पश्चिम बंगाल में हुगली नदी से कोलकाता (भूतपूर्व कलकत्ता) के दक्षिण–पश्चिम मे मिलती है. बिहार–पश्चिम बंगाल सीमा पर स्थित दामोदर घाटी में भारत की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण कोयला व अभ्रक खानें हैं और यह लंबे समय से सक्रिय औद्योगिक विकास का क्षेत्र रही है. प्रमुख कोयला खानें (झरिया, रानीगंज, गिरिडीह) अधिकाशत. खुली खदानें (ओपन पिट) हैं और इनमें खनन आसानी से हो जाता है. दामोदर घाटी निगम ने 1948 में कार्य करना आरंभ किया. इसने चार बहुउद्देशीय बाधों, तिलैया, मैथन, कोणार और पंचेट हिल का निर्माण कर जलाशयों की शृंखला बनाई. इसमें दुर्गापुर बांध और कोयला खानों को हुगली–कोलकाता औद्योगिक कॉम्प्लेक्स से जोडने वाली 130 किमी लबी नौसंचलन नहर भी शामिल है. यह परियोजना बाढ़ नियंत्रण, जलविद्युत, कोयला आधारित विद्युत संयंत्रों, मुख्यतः लगभग 3,85,000 हेक्टेयर की सिंचाई, वनरोपण, मछलीपालन, मनोरंजन और समूची घाटी में कृषि और उद्योग के सामान्य विकास की ज़रूरतें पूरी करती है, जिसके चलते 20वीं शताब्दी में बडी संख्या में बाहर से लोग आए. नदी के किनारे के कई नगर, जिनमें धनबाद, झरिया और सिंदरी शामिल हैं, सघन रेल और सड़क संजाल से जुड़े हैं.

दाराज़ी, मुहम्मद बिन इस्माइल अद्

(ज – बुखारा, तुर्किस्तान {अब उजबेकिस्तान में}; मृ.–1019/20), इस्लाम के इस्माईली मत के प्रचारक, जिनके नाम पर दरुज़ सप्रदाय का नाम पडा.

अद्–दाराज़ी संभवतः आधे तुर्क थे और समझा जाता है कि उन्होने 1017/18 मे इस्माईली प्रचारक के रूप में बुखारा से मिस्र की यात्रा की. उन्हें फ़ातमी ख़लीफ़ा अल–हकीम से मदद मिली और उन्होंने हम्ज़ा बिन अली और अन्य के साथ मिलकर खलीफ़ा की दिव्यता पर आधारित धर्म की शुरुआत की अद्–दाराज़ी के अनुसार, आदम में आई दिव्य आत्मा इमामों के उत्तराधिकारियो के माध्यम से अल–हकीम मे पहुची है. अल–हकीम ने अपनी दिव्यता में इस विश्वास को सक्रिय बढावा दिया और जब अद्–दाराज़ी ने सार्वजनिक रूप से काहिरा की प्रमुख मस्जिद में इस सिद्धात की घोषणा की तो दंगे भड़क उठे, जो संभवतः उनकी मृत्यु का कारण बने. दरुज धर्म का

दारि
फ़ोट

द्–दाराज़ी के नाम पर किया गया, क्योंकि उनके प्रवचनों के कारण इस संस्थापकों की तुलना में उनकी श्रेष्ठता की धाक जनता के मस्तिष्क में लाकि आंदोलन आयोजित करने वाले पहले व्यक्ति हम्जा थे.

दार्जिलिंग


न बंगाल

नगर, इसी नाम के ज़िले का मुख्यालय, पश्चिम बंगाल राज्य का सुदूर उत्तरी हिस्सा, पूर्वोत्तर भारत. दार्जिलिंग कोलकाता (भूतपूर्व कलकत्ता) से 491 किमी उत्तर में स्थित है. यह नगर सिक्किम हिमालय के लंबे व संकरे कटक पर स्थित है, जो महान रागित नदी के तल की तरफ अचानक उतरता है. यह नगर करीब 2,100 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है. साफ़ मौसम वाले दिन दार्जिलिंग से कंचनजंगा (8,586 मीटर) का भव्य दृश्य दिखाई देता है और पास के अवलोकन स्थल, टाइगर हिल से माउंट एवरेस्ट को देखा जा सकता है. इस नगर के नाम का मतलब 'आकाशीय बिजली का स्थान' है.

ज़ों ने बिना शर्त सत्तांतरण की कार्यवाही के अंतर्गत इस नगर को सिक्किम किया तथा ब्रिटिश सिपाहियों के सैनिटोरियम के रूप में विकसित किया गया. नगरपालिका बनाया गया और अब यह स्वायत्त गोरखा पर्वतीय परिषद य है, जो इस ज़िले के तीन पर्वतीय अनुमंडलों का प्रशासन चलाती है. सका मतलब है 'चार सड़कें', में माल शामिल है, जहां ये चारों सड़कें मिलती हा नगर का मुख्य विपणन केंद्र है तथा सर्वाधिक आकर्षक विहारस्थल है. से ऊंचे स्थल, आब्जरवेटरी हिल (2,175 मीटर) के शीर्ष पर महाकाल मंदिर एवं बौद्ध, दोनों के लिए पवित्र है. बर्च हिल में एक प्राकृतिक उद्यान एवं तारोहण संस्थान है. हिमालयी वनस्पति के लिए प्रसिद्ध लॉयड वनस्पति उद्यान ापित किया गया था. इन आकर्षणों के अलावा दार्जिलिंग में चिड़ियाघर, न संग्रहालय और घुड़दौड़ मैदान है. यह नगर अपने आवासीय विद्यालयों द्ध है. यहां की अर्थव्यवस्था मूलतः पर्यटन पर निर्भर है. दार्जिलिंग एक य सैरगाह है, जिसका कोलकाता के साथ सड़क, रेल एवं हवाई यातायात हां बड़ी संख्या में होटल हैं, जो अप्रैल और जून तथा सितंबर एवं नवंबर संख्या में इस 'पर्वतीय पर्यटक स्थलों की रानी' में आने वाले पर्यटकों की करते हैं.

ज़िला क्षेत्र में काफ़ी वर्षा होती है और अलग–अलग ऊंचाई के कारण ाय से लेकर शीतोष्ण तक विविधतापूर्ण जलवायु मिलती है. पर्वतों में शाहबलूत (ओक) के वनों तथा तराई के इलाके में मज़बूत काष्ठ वनों से कड़ी मिलती है. ज़िले की अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से चाय पर आधारित है, त्र से 1,800 मीटर की ऊंचाई तक बाग़ानों में उगाई जाती है. अन्य फसलें

है– चावल, मक्का, इलायची और गेहूं. यह ज़िला संतरे और अन्नानास की पैदावार के लिए भी प्रसिद्ध है. ज़िले में सिलीगुड़ी शहर के पास राजा राममोहनपुर मे उत्तर बंगाल विश्वविद्यालय है. यहां उत्तर बंगाल विश्वविद्यालय से संबद्ध एक इंजीनियरिंग और मेडिकल कॉलेज सहित कई महाविद्यालय हैं. जनसंख्या (2001) नगर 1,07,530; जिला कुल 16,05,900.

दावणगेरे

शहर, मध्य कर्नाटक (भूतपूर्व मैसूर) राज्य, दक्षिणी भारत. एक प्रमुख सडक एवं रेल जक्शन. इस शहर में एक बड़ा कपडा उद्योग है और यह कपास एवं अनाज व्यापार केद्र है. आसपास के गांवो मे हथकरघा सूती वस्त्र एव ऊन का उत्पादन होता है. दावणगेरे में मैसूर विश्वविद्यालय से संबद्ध अनेक महाविद्यालय हैं. यहां बापूजी इंस्टिट्यूट ऑफ इजीनियरिग टेक्नोलॉजी भी है जनसख्या (2001) न पा क्षेत्र 3,63,780; ज़िला कुल 17,89,693

दावलेश्वरम

नगर, पूर्वी–गोदावरी जिला, पूर्वोत्तर आंध्र प्रदेश राज्य, दक्षिणी भारत, गोदावरी नदी के मुहाने पर स्थित. दावलेश्वरम में 3.2 किमी लंबा बांध है, जिससे निकली नहरें चार लाख हेक्टेयर क्षेत्र की सिंचाई करती हैं इस कृषि प्रधान नगर को घेरे हुए चावल के खेत, बगीचे और गांव इस डेल्टा मे बिखरे हैं. जनसख्या (2001) 37,222.

दास

दस्यु भी लिखा जाता है, भारत में आदिम समुदाय के लोग, जिनका यहा आ कर बसने वाले आर्यों के साथ टकराव हुआ, 1500 ई पू. में आर्यो ने इनका काली चमडी वाले, कटु भाषी लोगो के रूप में वर्णन किया है, जो लिंग की पूजा करते थे. इस प्रकार कई विद्वानों की यह धारणा बनी कि हिंदुओं के धार्मिक प्रतीक लिंगम की पूजा की यहां से शुरुआत हुई, हालांकि हो सकता है कि इसका संबध उनकी यौन क्रियाओं से रहा हो. वे क़िलेबद स्थानों पर रहते थे, जहां से वे अपनी सेनाएं भेजते थे वे संभवतः मूल शूद्र या श्रमिक रहे होंगे, जो तीनो उच्च वर्गों, ब्राह्मणों (पुरोहितों), क्षत्रियों (योद्धाओं) और वैश्यों (व्यापारियों) की सेवा करते थे और जिन्हें उनके धार्मिक अनुष्ठानों से अलग रखा गया था.

दासगुप्ता, एस.एन.

पूरा नाम सुरेंद्रनाथ दासगुप्ता, (ज.–अक्तू. 1885, कुशिता, बंगाल, भारत; मृ–18 दिसं. 1952, लखनऊ, उत्तर प्रदेश, भारत), हिंदू दार्शनिक, जो पांच खंडों की अपनी प्रामाणिक रचना *हिस्ट्री ऑफ़ इंडियन फ़िलॉसफ़ी* (1922–55) के लिए विख्यात हैं पूर्वी तथा पश्चिमी विचारधाराओं के अध्ययन से उनके दार्शनिक सिद्धात का विकास हुआ और उसमें वेदांती

साहित्य, जैन धर्म (विशेषकर उसका रहस्यवाद), ब्रिटिश तथा अमेरिकी नवयथार्थवाद और क्रमिक विकासवाद के सिद्धांतों का समावेश था.

दासगुप्ता का परिवार संस्कृत अध्ययन और संस्कार की अपनी परंपरा के लिए विख्यात था सुरेंद्रनाथ की निजी शैक्षिक रुचि संस्कृत तथा विज्ञान, दोनों में थी. कलकत्ता (वर्तमान कोलकाता) के संस्कृत कॉलेज से सस्कृत तथा दर्शनशास्त्र में स्नातकोत्तर उपाधि लेने के बाद वह चटगाव कॉलेज में स्थायी प्रोफेसर हो गए और यहीं पर उन्होंने *हिस्ट्री ऑफ़ इंडियन फ़िलॉसफी* पर काम करना शुरू किया.

1920 के दशक के आरभिक वर्षों में दासगुप्ता ने इंग्लैंड की यात्रा की, जहा समकालीन यूरोपीय दर्शन पर उनके शोध प्रबंध के लिए उन्हें केंब्रिज विश्वविद्यालय से डॉक्टर की उपाधि प्राप्त हुई स्वदेश लौटने पर कलकत्ता उनके शिक्षण और शोध का केंद्र बना यूरोप के दार्शनिक समुदाय में उन्हें अच्छी मान्यता प्राप्त थी और उन्होने कई बार प्राध्यापक एवं वक्ता के रूप में अमेरिका और यूरोप की यात्रा की.

अपने दर्शन में दासगुप्ता ने बुद्धि–ज्ञान के सम्मिश्रण को ऐतिहासिक, क्रमिक विकास प्रक्रिया के एक अग की तरह व्याख्यायित किया है, एक ऐसी विकास प्रक्रिया, जो स्थान व समय के मूलभूत गर्भ से जैविक चरणों से गुज़रती हुई प्रकट हुई थी. इस प्रक्रिया का अंत है– स्वर्गिक परमानंद, जिसे व्यक्ति प्रेम के सर्वोत्कृष्ट रूप में संजोता है

दास, चित्तरंजन

इन्हें देशबंधु भी कहा जाता है, (ज.–5 नवं 1870, कलकत्ता, {वर्तमान कोलकाता} बगाल, भारत; मृ.–16 जून 1925, दार्जिलिंग, बंगाल, भारत) राजनेता और ब्रिटिश शासन के अतर्गत बंगाल की स्वराज पार्टी के नेता.



ाद्यार्थी चित्तरंजन दास
ा टाइम्स

ब्रिटिश नागरिकों के आधिक्य वाली इंडियन सिविल सर्विस की प्रतियोगी प्रवेश परीक्षा मे अनुत्तीर्ण होने के बाद दास वकालत के पेशे में चले गए. उन्होंने राजनीतिक अपराधों के आरोपियो की पैरवी की और राष्ट्रवादी पत्रकारिता मे सक्रिय हिस्सा लिया

चित्तरंजन दास भारत मे ब्रिटिश शासन के घोर विरोधी थे और इससे पूरी तरह असहमत थे कि भारत का राजनीतिक या आर्थिक विकास पाश्चात्य पद्धति पर आधारित हो. प्राचीन भारतीय ग्रामीण जीवन उनका आदर्श था और वह प्राचीन भारतीय इतिहास में ही स्वर्ण युग को देखते थे महात्मा गांधी द्वारा ब्रिटिश सरकार के खिलाफ चलाए गए असहयोग आंदोलन का उन्होंने समर्थन किया और 1921 में राजनीतिक अपराधी के तौर पर उन्हें छह महीने की जेल हो गई. 1922 में वह भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष बने. काग्रेस ने उनकी अध्यक्षता में ब्रिटेन द्वारा प्रायोजित प्रांतीय परिषदों के चुनावों का बहिष्कार करने का इरादा छोड़ दिया

इसके बदले उसने फ़ैसला किया कि वह इन चुनावों में हिस्सा लेकर पद हासिल करेगी ताकि सरकार के भीतर रहकर सरकारी कामकाज में रुकावट डालने का मौका मिल सके

बाद में, जब बगाल में स्वराज पार्टी सबसे बडी पार्टी के रूप में जीती, तो दास ने यह कहकर मुख्यमंत्री पद अस्वीकार कर दिया कि उनका उद्देश्य मौजूदा सरकार को तोड़ना था उसके साथ सहयोग करना नहीं 1924 में वह कलकत्ता (वर्तमान कोलकाता) के महापौर चुने गए और उन्होंने शहर की उपेक्षित भारतीय जनता की हालत सुधारने के प्रयास किए. 1925 में दास और भारत राज्य सचिव लॉर्ड बर्केनहेड के बीच समझौते के आसार दिखाई दिए, लेकिन समझौता होने से पहले ही दास की मृत्यु हो गई.

दाहिरिया

इस्लाम में, नास्तिक लोग, जिनका दावा है कि समय (अरबी में दहर) ही उनके अस्तित्व को संचालित करता है. *कुरान* में इनके एक संदर्भ के कारण इनका यह नामकरण हुआ जिसमें इनकी उक्ति, 'हमारे वर्तमान जीवन के अतिरिक्त और कोई जीवन नहीं है; हम मरते हैं और हम जीते हैं तथा समय–चक्र के अलावा और कोई भी हमें नष्ट नही करता है' (45:24), के कारण इनका परित्याग किया गया है.

इस्लामी धार्मिक साहित्य में दाहिरिया को प्रकृतिवादी और भौतिकवादी के रूप मे दर्शाया गया है, जो ऐसी किसी भी वस्तु के अस्तित्व से इनकार करते हैं, जिसे इंद्रियो के माध्यम से अनुभूत न किया जा सके. लेकिन विद्वानो के बीच दाहिरिया की उत्पत्ति और उनके मौलिक सिद्धांतों को लेकर भ्रम की स्थिति बनी हुई है 11वी शताब्दी मे गजाली ने प्राचीन यूनानी दर्शन को उनका मूल स्रोत माना और प्रकृतिवादियों (ताबिई) से उन्हे अलग किया, जो उत्पत्तिकारक देवता में विश्वास रखते है, जबकि दाहिरिया सिर्फ़ प्राकृतिक नियमों को मान्यता देते हैं. अन्य विद्वानो ने उन्हें परम शक्ति में आस्था रखने वाला माना, जो आत्मा या शैतान तथा फ़रिश्तों में यकीन नहीं रखते.

धर्मपरायण मुसलमानों की सामान्य अवधारणा मे दाहिरिया लोग मौकापरस्त हैं, जो स्वार्थी इच्छाओं के अनुरूप अपने जीवन को संचालित करते हैं. वे मनुष्य तथा अचल वस्तुओं मे फर्क नहीं करते तथा उनमें करुणा और मानवीय अनुभूतियां नही हैं.

दिडिगल

शहर, तमिलनाडु राज्य, दक्षिण–पूर्वी भारत. पालनी एवं तिरुमलाई पहाड़ियों के बीच स्थित यह शहर एक सड़क परिवहन केंद्र है. इसका नाम तिंतु काल (तकिया चट्टान) शब्द से बना है, जो शहर के प्रमुख आवरणहीन पहाड़ की ओर इंगित करता है विजयनगर काल (1336–1565) में इस पहाड पर बने दुर्ग का उपयोग 17वीं से 19वीं सदी तक हिंदू, मुसलमान और ब्रिटिश युद्धों में होता रहा. आज इस शहर मे अनेक सूत कताई एव बुनाई मिलें तथा रेशम बुनाई, आभूषण व सिगार उत्पादन जैसे हस्तशिल्प उद्योग है दिडिगल में दो उदारवादी कला महाविद्यालय हैं, जो मदुरै कामराज विश्वविद्यालय से संबद्ध है जनसख्या (2001) शहर 1,96,619; ज़िला कुल 19,18,960.

दिगंबर

(सस्कृत शब्द, अर्थात नग्न), जैन धर्म के दो प्रमुख मतों में से एक, जिनके धार्मिक मुनि कोई वस्त्र नहीं पहनते और संपत्ति को त्याग देते हैं. श्वेताबर नामक दूसरे मत के मुनि सफ़ेद कपडे पहनते हैं. कहा जाता है कि चंद्रगुप्त मौर्य के काल में गंभीर अकाल के समय जैन मुनियो के गंगा नदी या उज्जैन से दक्षिण की ओर चले जाने के कारण ही उनका दो मतों में विभाजन हुआ. प्रवासी मुनियों के प्रमुख भद्रबाहु ने इस पर बल दिया कि पुरुषो को कोई वस्त्र नही पहनना चाहिए और इस प्रकार उन्होंने अंतिम तीर्थंकर या मोक्ष प्राप्त करने वाले शिक्षक महावीर द्वारा प्रस्तुत उदाहरण का अनुसरण किया.

उत्तर मे ही रह गए मुनियों के प्रमुख स्थूलभद्र ने सफेद वस्त्र पहनने की अनुमति दी आम युग की शुरुआत के समय दिगंबर और श्वेतांबर इस बात पर अंततः अलग हो गए कि क्या संपत्ति (यहा तक कि वस्त्र भी) रखने वाले किसी मुनि के लिए मोक्ष प्राप्त करना संभव है ? हालांकि दोनो गुटो द्वारा की गई जैन धर्म के दार्शनिक सिद्धांतों की विवेचना मे कोई उल्लेखनीय अंतर नहीं है और धार्मिक अनुष्ठानों, ग्रंथों और साहित्य मे समय के साथ मतभेद उत्पन्न होते रहे हैं, लेकिन धार्मिक स्थानों के स्वामित्व को लेकर बहुत से विवाद उठे, जो आज भी विद्यमान है.

निर्वस्त्र रहने के अलावा दिगंबरो की कुछ ऐसी मान्यताएं है, जिनसे श्वेतांबर मतभेद रखते है यथा– 1. पूर्ण संत (केवलिन) को जीवित रहने के लिए भोजन की आवश्यकता नहीं 2 महावीर ने कभी विवाह नहीं किया, 3. कोई महिला, पुरुष के रूप में पुनर्जन्म लिए बिना मोक्ष प्राप्त नहीं कर सकती, 4. सभी तीर्थंकरों की मूर्ति बनाते समय उन्हें नग्न, आभूषणहीन और नीचे की ओर दृष्टि किए हुए दिखाया जाना चाहिए. दिगंबर, श्वेतांबर के धार्मिक ग्रथ साहित्य को मान्यता नही देते, लेकिन यह मानते हैं कि प्रारभिक साहित्य धीरे–धीरे भुला दिया गया और दूसरी शताब्दी तक वह पूरी तरह खो गया था.

दक्षिण भारत में मध्यकालीन युग में दिगंबरों का पर्याप्त प्रभाव था, लेकिन यह कम होता गया, क्योंकि उस क्षेत्र में हिंदू भक्तिवाद, शैववाद और वैष्णववाद बढने लगा दिगंबर मत प्रमुख रूप से दक्षिणी महाराष्ट्र, कर्नाटक और राजस्थान राज्यों में है और इसके 10 लाख अनुयायी हैं.

दिनकर, रामधारी सिंह

(ज.–23 सितं. 1908, सिमरिया, बिहार; मृ.–24 अप्रै. 1974), हिंदी के सुविख्यात कवि रामधारी सिंह दिनकर के पिता एक साधारण किसान थे और दिनकर दो वर्ष के थे, जब उनका देहावसान हो गया. परिणामतः दिनकर और उनके भाई–बहनों का पालन–पोषण विधवा माता ने किया दिनकर का बचपन और कैशोर्य देहात में बीता, जहां दूर तक फैले खेतों की हरियाली, बांसों के झुरमुट, आमों के बगीचे और कांस के विस्तार थे प्रकृति की इस सुषमा का प्रभाव दिनकर के मन में बस गया, पर शायद इसीलिए वास्तविक जीवन की कठोरताओं का भी अधिक गहरा प्रभाव उन पर पड़ा.


रामधारी सिह दि
सौजन्य भारती

1928 में मैट्रिक के बाद दिनकर ने पटना से 1932 मे इतिहास में बी.ए. ऑनर्स किया अगले ही वर्ष एक स्कूल में प्रधानाध्यापक नियुक्त हुए, पर 1934 मे बिहार सरकार के अधीन सब–रजिस्ट्रार का पद स्वीकार कर लिया. लगभग नौ वर्षों तक वह इस पद पर रहे और उनका समूचा कार्यकाल बिहार के देहातो मे बीता तथा जीवन का जो पीडित रूप उन्होंने बचपन से देखा था, उसका और तीखा रूप उनके मन को मथ गया.

फिर तो ज्वार उमडा और *रेणुका, हुंकार, रसवंती* और *द्वंद्वगीत* रचे गए. *रेणुका* और *हुंकार* की कुछ रचनाएं यहां–वहां प्रकाश में आईं और अंग्रेज़ प्रशासकों को समझते देर न लगी कि वे एक गलत आदमी को अपने तत्र का अग बना बैठे हैं और दिनकर की फ़ाइल तैयार होने लगी, बात–बात पर कैफ़ियत तलब होती और चेतावनियां मिला करतीं. चार वर्ष में बाईस बार उनका तबादला किया गया.

1947 में देश स्वाधीन हुआ और वह बिहार विश्वविद्यालय मे हिदी के प्राध्यापक व विभागाध्यक्ष नियुक्त होकर मुज़फ़्फ़रपुर पहुंचे. 1952 मे जब भारत की प्रथम संसद का निर्माण हुआ, तो उन्हें राज्यसभा का सदस्य चुना गया और वह दिल्ली आ गए. दिनकर 12 वर्ष ससद–सदस्य रहे, बाद मे उन्हें भागलपुर विश्वविद्यालय का कुलपति नियुक्त किया गया लेकिन अगले ही वर्ष भारत सरकार ने उन्हें अपना हिदी सलाहकार नियुक्त किया और वह फिर दिल्ली लौट आए.

उनके कवि–जीवन का आंरभ 1935 से हुआ, जब छायावाद के कुहासे को चीरती हुई *रेणुका* प्रकाशित हुई और हिंदी जगत एक बिल्कुल नई शैली, नई शक्ति, नई भाषा की गूंज से भर उठा. तीन वर्ष बाद जब *हुंकार* प्रकाशित हुई, तो देश के युवा वर्ग ने कवि और उसकी ओजमयी कविताओं को कंठहार बना लिया. सभी के लिए वह अब राष्ट्रीयता, विद्रोह और क्राति के कवि थे *कुरुक्षेत्र* द्वितीय महायुद्ध के समय की रचना है, किंतु उसकी मूल प्रेरणा युद्ध नहीं, देशभक्त युवा मानस के हिंसा–अहिंसा के द्वद्व से उपजी थी.

1955 में *नीलकुसुम* दिनकर के काव्य में एक मोड़ बनकर आया. अभी तक उनका काव्य आवेश का काव्य था; *नीलकुसुम* ने नियंत्रण और गहराइयों में पैठने की प्रवृत्ति की सूचना दी. छह वर्ष बाद *उर्वशी* प्रकाशित हुई, तो हिदी साहित्य संसार में एक ओर उसकी कटु आलोचना और दूसरी ओर मुक्तकंठ से प्रशंसा हुई. धीरे–धीरे स्थिति सामान्य हुई और इस काव्य–नाटक को दिनकर की 'कवि–प्रतिभा का चमत्कार' माना गया कवि ने इस वैदिक मिथक के माध्यम से देवता व मनुष्य, स्वर्ग व पृथ्वी, अप्सरा व लक्ष्मी और काम व अध्यात्म के संबंधों का अद्भुत विश्लेषण किया है.

दिनकर अपने युग के प्रमुखतम कवि ही नहीं, एक सफल और प्रभावपूर्ण गद्य लेखक भी थे. सरल भाषा और प्रांजल शैली में उन्होंने विभिन्न साहित्यिक विषयों पर निबंध के अलावा बोधकथा, डायरी, संस्मरण तथा दर्शन व इतिहासगत तथ्यो के विवेचन भी लिखे.



प्रमुख कृतियां : कविता– *रेणुका* (1929), *हुंकार* (1938), *कुरुक्षेत्र* (1946), *सामधेनी* (1947) *रश्मिरथी* (1952), *सीपी और शख* (1957), *उर्वशी* (1961), *परशुराम की प्रतीक्षा* (1963) *आत्मा की आंखें* (1964); गद्य– *हमारी सांस्कृतिक कहानी* (1955), *संस्कृति के चार अध्याय* (1956), *काव्य की भूमिका* (1958), *शुद्ध कविता की खोज* (1966).

दिनकर को *कुरुक्षेत्र* के लिए इलाहाबाद की साहित्यकार संसद द्वारा पुरस्कृत (1948) किया गया और उन्हे ज्ञानपीठ पुरस्कार (1973) प्रदान किया गया.

दिबांग घाटी

क्षेत्र, पूर्वोत्तर अरुणाचल प्रदेश राज्य, पूर्वी भारत. यह क्षेत्र बृहद हिमालय पर्वत शृंखला में स्थित है, इसकी उत्तरी एवं पूर्वी शृंखलाए तिब्बत से लगती हैं. मिशमी पहाड़ियां, जो हिमालय का दक्षिणवर्ती विस्तार हैं, इस क्षेत्र का अधिकतर उत्तरी हिस्सा घेरती हैं. इनकी औसत ऊचाई 4,500 मीटर है और 3,950 मीटर पर योंग्याप तथा 4,750 मीटर पर काया जैसे दर्रे यहां जगह–जगह मिलते है. इस क्षेत्र का नाम दिबांग नदी पर पड़ा है. अहुई, एम्रा, अद्जोन और द्री धाराओ के साथ दिबाग दक्षिण की ओर बहती है और ब्रह्मपुत्र नदी से जा मिलती है. इस क्षेत्र के पहाड़ी हिस्से में बांज (ओक), द्विफल (मेपल), हपुषा (जुनिपर) और चीड़ के उपोष्णीय सदाबहार वन है. मिशमी, मिजू, इदू (चुलीकट्टा), खामती, और सिंगफो जनजातियां इस इलाके में निवास करती है तथा तिब्बती–बर्मी भाषाई कुल की बोलियां बोलती हैं. सीढ़ीनुमा पहाड़ियों और नदी से लगे समतल भू–खडो पर चावल, मक्का, ज्वार–बाजरा, आलू एवं कपास उगाए जाते हैं. क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था के लिए वस्तु–विनिमय हाट महत्त्वपूर्ण है. मिशमी दक्षिण में असम के मैदानी इलाकों के लोगों के साथ कस्तूरी, मधुमक्खी–मोम, अदरक एव मिर्चों का व्यापार करते हैं. यहां चिकनी मिट्टी, ग्रेफाइट, चूना–पत्थर और तांबे का खनन होता है कुटीर उद्योगों में बेंत का काम, कपडा बुनाई, चांदी और लोहे का काम शामिल है. अधिकतर दूरियां साधारण मार्गों से तय की जाती हैं, हालांकि कुछ पक्की सडकें भी हैं. अनिनी इस क्षेत्र की प्रमुख बस्ती है. इगू, इदू, मिशमी पुजारियों का गंभीर गति–नृत्य, इस क्षेत्र से जुडा है.

दियत

इस्लाम में, लहू बहाने के लिए वाजिब पारंपरिक हर्जाना. पूर्व इस्लामी काल में किसी की जान लेने का हर्जाना 10 ऊटनियां थीं. इस्लाम के उद्भव स्थान में यह संख्या बढ़ाकर 100 कर दी गई और बाद में इस नियम की पैगंबर मुहम्मद ने पुष्टि कर दी.

विभिन्न दर्जों की कठोर चोटों के लिए व्यापक नियम बनाए गए. एक आंख या एक पाव के नुकसान का हर्जाना 50 ऊंटनियां था, सिर या पेट पर पड़ने वाले मुक्के का हर्जाना 33 ऊंटनिया, एक दांत के नुकसान या त्वचा के भीतर हड्डी तक के गहरे घाव का हर्जाना 5 ऊंट था. प्रत्येक मामले में ऊंट की निर्धारित आयु अलग–अलग थी, जैसे

इरादे से की गई नर हत्या के लिए एक वर्ष की 25 ऊटनियां, दो वर्ष की 25, तीन वर्ष की 25 और चार वर्ष की 25 ऊंटनियां हर्जाना था.

किसी एक अथवा दोनों पक्षों के लोगो के वयस्क, मुक्त, मुस्लिम व्यक्ति न होने पर निर्धारित हर्जाना बदल जाता था. अधिकाश मामलो मे नाबालिग़ के लिए दियत देना जरूरी नहीं होता था. समान परिस्थितियों में महिला को पुरुष की तुलना में केवल आधा दियत मिलता था. किसी गुलाम के मारे जाने पर उसके बाज़ार मूल्य के अनुसार ही उसका दियत होता था. इसी प्रकार, उसके घायल होने पर जितनी गिरावट उसके बाज़ार मूल्य में आती थी, उतना ही उसे दियत मिलता था. किसी ईसाई या यहूदी का दियत मुसलमान के दियत से एक–तिहाई होता था. यदि किसी ईसाई या यहूदी की बेइमानी से हत्या की जाती थी, तो उसके हत्यारे को मृत्युदंड मिलता था. महिलाओ और बच्चों को दियत देने से मुक्त रखा गया था.

जान–बूझकर अथवा अनजाने में की गई हत्या के मामले मे अपराधी (अथवा उसकी मृत्यु की अवस्था में उसके उत्तराधिकारी) स्वय दियत भरने के लिए उत्तरदायी होता है. उसके संबंधी हर्जाना भर सकते हैं, लेकिन कोई बाध्यता नहीं है. यदि अपराधी तत्काल दियत की पूरी राशि नहीं दे सकता है, तो प्राप्त करने वाले की सहमति से समय सीमा बढाई जा सकती है. दुकानों और खेतों में काम करते हुए कर्मचारियों को लगी चोटों के लिए उनका स्वामी जिम्मेदार होता है

शहरी लोगों को दियत सोने या चांदी में मिलता था, क्योंकि वे आमतौर पर ऊंट पसंद नही करते थे. दूसरी तरफ़ तंबुओं में रहने वाले लोग स्थापित नियमों के अनुसार ऊटों मे दियत देते थे.

दिल्ली

दिल्ली, भारत की राजधानी, एक महानगरीय क्षेत्र तथा भारत का एक राज्य भी है. महान ऐतिहासिक महत्त्व वाला यह महानगरीय क्षेत्र महत्त्वपूर्ण व्यापारिक, परिवहन एवं सास्कृतिक हलचलों से भरा है. यह राज्य देश की राजनीति का स्नायु केंद्र है. वास्तव मे यहां दो 'शहर' हैं, पुरानी और नई दिल्ली. राज्य इन दोनों के साथ–साथ आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों से मिलकर बना है, जो 213 से 305 मीटर की भिन्न ऊंचाइयो पर करीब 1,485 वर्ग किमी मे फैला है. दिल्ली देश के उत्तरी मध्य भाग में गंगा की प्रमुख सहायक नदी यमुना के दोनों तरफ़ बसी है. इसकी पूर्वी सीमा पर उत्तर प्रदेश राज्य है तथा उत्तर, पश्चिम तथा दक्षिण में हरियाणा है. 1,37,82,976 (2001) की जनसख्या वाली दिल्ली, देश का तीसरा बडा शहर है. अनुश्रुति है कि इसका वर्तमान नाम राजा ढीलू के नाम पर पड़ा, जिनका आधिपत्य ई.पू. पहली शताब्दी में इस क्षेत्र पर था. बहरहाल, बिजोला अभिलेखों (1170 ई.) में उल्लिखित ढिल्ली या ढिल्लिका सबसे पहला लिखित उद्धरण है.

भौतिक एवं मानव भूगोल

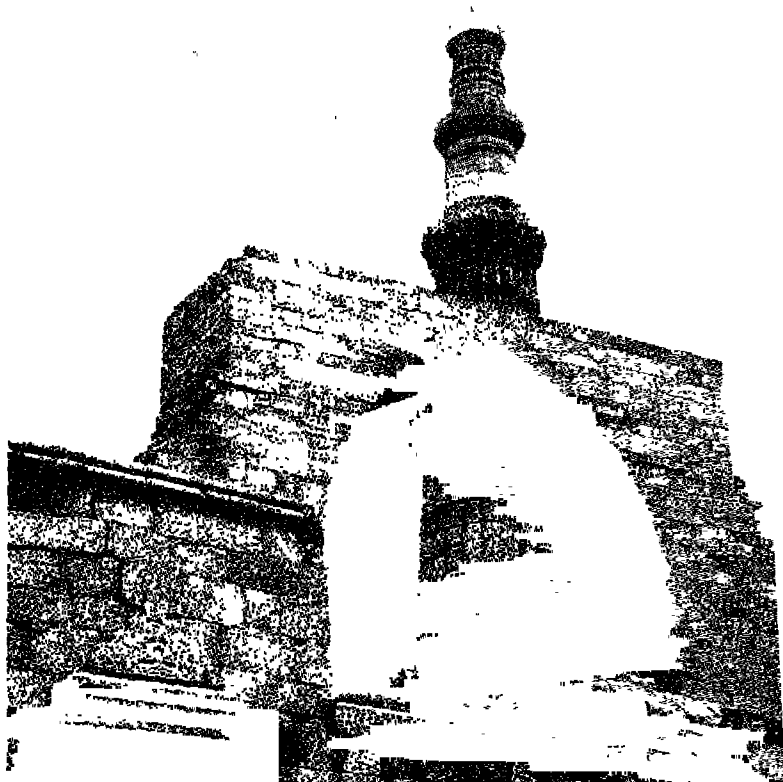
दिल्ली एक जलसंभर पर स्थित है, जो गंगा तथा सिंध नदी प्रणालियो को विभाजित करता है. दिल्ली की सबसे महत्त्वपूर्ण स्थलाकृति विशेषता पर्वत स्कंध (रिज) है, जो राजस्थान प्रांत की प्राचीन अरावली पर्वत श्रेणियो का चरम बिंदु है. अरावली संभवत दुनिया की सबसे पुरानी पर्वतमाला है, लेकिन अब यह पूरी तरह वृक्ष विहीन हो चुकी है पश्चिमोत्तर, पश्चिम तथा दक्षिण मे फैला और एक तिकोने परकोटे की दो भुजाओ जैसा लगने वाला यह स्कध क्षेत्र 180 वर्ग किमी क्षेत्र में फैले कछारी मिट्टी के मैदान को आकृति की विविधता देता है तथा दिल्ली को कुछ उत्कृष्ट जीव व वनस्पतिया उपलब्ध कराता है. यमुना नदी त्रिभुजाकार परकोटे का तीसरा किनारा बनाती है इसी त्रिकोण के भीतर दिल्ली के प्रसिद्ध सात शहरों की उत्पत्ति ई.पू. 1000 से 17वी शताब्दी के बीच हुई.

जलवायु

दिल्ली की जलवायु उपोष्ण है, जो इसके भीतरी प्रदेश होने की भू–स्थिति से प्रभावित है गर्मी के महीने (मई तथा जून) बेहद शुष्क और झुलसाने वाले होते हैं. दिन का तापमान कभी–कभी 43°–45°से. तक पहुंच जाता है. मानसून जुलाई में आता है और तापमान को कम करता है, लेकिन सितंबर के अंत तक मौसम गर्म, उमस भरा और कष्टप्रद रहता है यहां की वार्षिक औसत वर्षा लगभग 660 मिमी है. अक्तूबर से मार्च के बीच का मौसम काफी सुहावना रहता है. हालांकि दिसंबर तथा जनवरी के महीने ख़ूब ठंडे व कोहरे से भरे होते हैं और कभी–कभी वर्षा भी हो जाती है. शीतकाल में प्रतिदिन का औसत न्यूनतम तापमान 7°से के आसपास रहता है, लेकिन कुछ रातें अधिक सर्द होती है तथा पारा 1° से 3°से. तक नीचे गिर जाता है शीत से वसंत में परिवर्तन धीरे–धीरे होता है

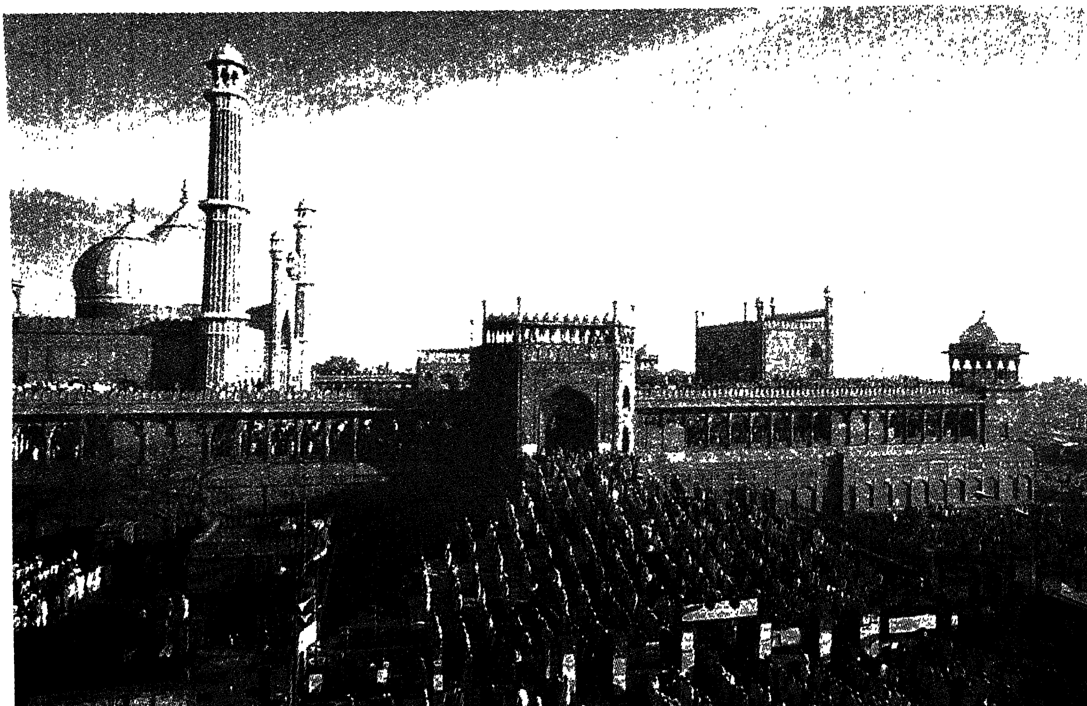
वनस्पति

दिल्ली की परिवर्तनशील जलवायु के कारण तीन वानस्पतिक काल होते हैं. तथापि वर्षा की कमी तथा भूमिगत जल–स्तर के नीचे जाने से प्राकृतिक वनस्पति का प्रर्याप्त विकास नही हो पाता. फूलो के करीब 1,000 प्रजातियां, जिनमें से अधिकांश स्वदेशी मूल के हैं, यहां के वातावरण के अनुरूप ढल चुके है और दिल्ली शहर तथा आसपास के वातावरण में फलफूल रहे है. पहाडियों एव नदी के तटवर्ती भूभाग की वनस्पतिया स्पष्टतः भिन्न हैं. स्कंध क्षेत्र में पाई जाने वाली पर्वतीय वनस्पतियो मे बबूल, जगली खजूर तथा सघन झाड़ियां हैं, जिनमें कुछ फूलदार प्रजातियां भी शामिल हैं. यहा घास बेलें तथा लिपटने वाली अल्पायु लताएं भी होती हैं, जो केवल बरसात के मौसम मे पनपती हैं. दूसरी ओर नदी के तट के रेतीले एव क्षारीय भूभाग में, विशेषकर मानसून व ठंड के महीने मे, वनस्पतियां समृद्ध एवं भिन्न हैं.



ासा विपुल, विविध तथा देशज है तथा प्राणिविज्ञान की दृष्टि में आता है. मांसाहारी जीव प्रमुख रूप से देशी स्तनपायी हैं. डी, सियार तथा तेंदुए, जो पहले निचले जंगलों में विचरण शहर की सीमांत पहाड़ी चोटियों पर पाए जाते हैं. हिरन तथा का प्रतिनिधित्व करते हैं. ये अब अपनी प्राकृतिक पर्यावास में ख़रगोश, चूहे व गिलहरिया शहर के कृतंकजीव हैं तथा चमगादड़, देल्ली के कीट भक्षी प्राणी हैं. देशी नरवानर गणों में बंदर ही एकमात्र जीव हैं, जो अक्सर मंदिरों तथा ऐतिहासिक खंडहरों है

ो समृद्ध एवं विविध है. घरेलू कबूतर, गौरैया, चीलें, कौवे, तोते, साल पाए जाते हैं. दिल्ली के आसपास की झीलें शीतकाल मे आकर्षित करती हैं. यमुना नदी में मछलियों की 65 प्रजातियां



जामा मस्जिद, दिल्ली

प्रशासन एवं नियोजन

दिल्ली ने प्रशासनिक व्यवस्था में कई फ़ेरबदल देखे हैं. 2 अगस्त 1858 को ब्रिटिश संसद ने भारत सरकार अधिनियम पारित किया, जिसने भारत की अंग्रेज़ी सत्ता को ईस्ट इंडिया कंपनी से ब्रिटिश राज में स्थानांतरित कर दिया. 1876 में महारानी विक्टोरिया के शासनाधिकार में 'भारत की सम्राज्ञी' पदवी शामिल हो गई. 1947 तक दिल्ली मुख्य आयुक्त की अध्यक्षता में ब्रिटिश प्रांत रही. आज़ादी के बाद 1952 में यह केंद्रशासित राज्य बनी, लेकिन 1956 में इसका दर्जा बदल गया तथा यह केंद्र सरकार के अधीन केंद्रशासित प्रदेश हो गई. 1958 में शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्रों के लिए एक एकीकृत निगम की स्थापना की गई. दिल्ली की प्रशासनिक व्यवस्था में प्रशासनिक अधिनियम 1966 के तहत फिर परिवर्तन किया गया तथा तीन स्तरीय प्रणाली लागू की गई, जो एक उपराज्यपाल और एक कार्यकारी परिषद, एक निर्वाचित महानगरीय परिषद तथा नगर निगम को मिलाकर बनाई गई है. संविधान के 69वें संशोधन द्वारा इसे 1991 में विशिष्ट राज्य का दर्जा एवं एक निर्वाचित विधानसभा दी गई. राष्ट्रपति द्वारा मनोनीत उप–राज्यपाल दिल्ली का प्रमुख होता है और प्रशासन मुख्यमंत्री चलाता है, जो निर्वाचित दल द्वारा नियुक्त किया जाता है.

दिल्ली राज्य प्रशासनिक एवं नियोजन क्षेत्रों के कई स्तरों का समूह है. इसका दायरा 1,485 वर्ग किमी है, जिसमें शहरी संकेंद्रण तथा 209 गांव आते हैं, जो दिल्ली तथा